उत्तम पुरुष

ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघवराव

उत्तम पुरुष

लेखक : ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघवराव

हिन्दी अनुवादः श्रीमति तूनुगुंट्ला राज्य लक्ष्मी

For Books Please Contact :
TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.
W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.70/-

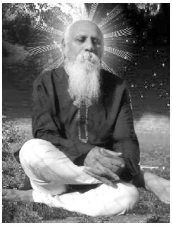

ध्यान की विधि सांस पर ध्यान

जिस किसी को जो कोई आरामदायक आसान हो उसमें आराम से बैठकर... दोनों हाथों को जोड़कर... दोनों आंखों को बंद करके... प्राकृतिक रूप से होने वाला सांस लेना और छोड़ने की प्रक्रिया का अवलोकन करना चाहिए!

बीच-बीच में अनेकानेक सोच मन में आते हैं उन्हें वहीं के वहीं कटौती करके... फिर से बार-बार सांस पर ही ध्यान ले जाते रहना चाहिए... धीरे-धीरे निर्विचार की स्थिति मिलती है.... चित्त वृत्तों का निरोध होगा... मन निर्विषय, शून्य हो जाएगा। मन को शांति मिलेगा। यही ध्यान की अवस्था है।

इस निर्विचार अवस्था में होने वाले अनेकानेक शारीरिक, नाड़ी मंडल, आत्मा अनुभवों का अवलोकन करना चाहिए। इस स्थिति में ब्र्स्मांडीय प्राण शक्ति अत्यधिक मात्रा से शरीर में प्रवेश करके नाड़ी मंडल को शुद्ध करता है। उस ऊर्जा के कारण बीमारियां कम हो जाते हैं। नाड़ी मंडल शुद्ध होने के कारण कर्मों का नाश होते हैं।

हर दिन अपने उम्र के हिसाब से... जितना उम्र हो कम से कम उतने मिनट... जरूर... दिन में दो बार... ध्यान करना चाहिए।

कौन उत्तम पुरुष है?

गौतम बुद्ध बहुत बोध करते थे। उनका हर एक बोध आचरणीय है। यदि बुद्ध के बोधों को समझकर उनका आचरण किया जाए, तो कोई भी दुःख से बाहर निकल सकता है। बुद्ध के बोध उतनी महान हैं। इसलिए, उन से दिए गए बोधों में से अब हम नीचे बताये गये बोध के बारे में जानेंगे।

'जो अंधविश्वासों का अंत करता है, निर्वाण तत्व विज्ञान को जानता है, भवबंधन से सदा मुक्त होने वाला, जो तृष्णा रहित है वही उत्तम पुरुष है।'

पहले उत्तम पुरुष के बारे में जानेंगे। उत्तम पुरुष का मतलब है सबसे उत्तम, जो अपनी बुद्धि को विकसित किया, जिसने ज्ञान अर्जित किया हो। ऐसे उत्तम पुरुष के लक्षणों के बारे में बुद्ध ने बताया है।

अंधविश्वास अर्थात मूढ़ विश्वास। अंत को देखने वाले अर्थात जिन्होंने छोड़ दिया। मूढ़ विश्वासों को छोड़ देने वाला। निर्वाण तत्व का ज्ञान जनने वाले अर्थात जो मोक्ष के महानता को जानने वाला। भवबंधन अर्थात परिवार के बंधनों से मुक्त होना, सदैव मुक्त रहने वाले अर्थात वे जो संसार बंधनों से पूरी तरह से बाहर निकल चुके हैं।

तृष्णा रहित व्यक्ति अर्थात जिसकी कोई इच्छाएँ नहीं होतीं, वह उत्तम पुरुष कहलाता है। यह जानना चाहिए कि जिनके पास ये गुण होते हैं, वे सभी मनुष्यों में महान हैं।

1) 'अंधविश्वासों का अंत देखने वाला':-

इधर फिर से हम बुद्ध द्वारा बताए गए हर एक शब्द का मतलब जानने का कोशिश करेंगे। तब हमें उस संदेश का अर्थ पूरी तरह से समझ में आएगा। अंधविश्वासों का अंत करने वाला अर्थात वह है जिसे मूढ़ विश्वास नहीं होते। मैं पत्री जी का बार-बार प्रस्ताव करने का मुख्य कारण यह है कि मैंने यह सब उन्हीं से सीखा और समझा है।

पत्री जी पहले सभी में मौजूद अंधविश्वासों को दूर करने का प्रयास करते थे। इसका कारण यह है कि कोई भी अंधविश्वासों से जो भी काम करते हैं, वे तीन तरीकों से करते हैं।

1.पूर्व से, पीढ़ी दर पीढ़ी से प्रथा के रूप में आने की वजह से करते हैं।

2.सभी कर रहे हैं, इसलिए करते रहते हैं।

3.किसी बुजुर्ग या पंडित ने कहा है, इसलिए करते रहते हैं।

मूढ़ विश्वासों से होने वाले इन तीन प्रकार के होते हैं।

कुछ लोग पीढ़ियों से आ रहे प्रथा का पालन करते हैं। कुछ लोग वही करते हैं जो अधिकतर लोग करते हैं। और कुछ लोग यह सोचकर मानते हैं कि बुजुर्ग कह रहे हैं, तो वे गलत क्यों कहेंगे? इसी अभिप्राय में अनुसरण करते हैं।

इसलिए वे ऐसा क्यों करते हैं? क्योंकि उनमें विवेक नहीं होता, यानी सोचने की शक्ति, निर्णय लेने की शक्ति नहीं होती। साथ ही, जिनकी बुद्धि विकसित नहीं होती, उनमें विवेक नहीं होता। मुख्यतः जिनमें तमोगुण, रजोगुण के लक्षण होते हैं, वे इस प्रकार व्यवहार करते रहते हैं।

सात्विक गुण में आने के बावजूद भी बुद्धि का पूरी तरह से विकसित न होना इस प्रकार के व्यवहार का कारण बनता है। तमोगुण में रहने वाले पूर्व से जो आ रहा है उसी का आचरण करते हैं, वे वाद भी करते हैं कि यह सही है। राजोगुण में आने पर सब यही कर रहे हैं ना! वही आचरण भी करते हैं।

सात्त्विक गुण में आते ही जो पंडित महान उपन्यास देने वाले, या शास्त्रों में विषयों को रट लगाकर बिना रुकावट से बताते रहते हैं। जब इतने महान लोग बताते हैं, तो वो बातें सही कैसे नहीं होगा? ऐसा राय में होते हैं। लेकिन इस स्थिति में विवेक का उपयोग नहीं करते।

जिनकी बुद्धि अच्छी तरह विकसित होती है, जो हर विषय को सोच

सकते हैं, वे सावधानी से सोचते हैं। वे पहले जो करते थे, उसकी तुलना अब योगियों और ज्ञानियों द्वारा कही गई बातों से करते हैं, अच्छे और बुरे का विश्लेषण करते हैं।

यदि आवश्यक हो तो वे कुछ ग्रंथों का पठन करते हैं। उपनिषद, वेद, भगवद्गीता, पुराण और महान योगियों द्वारा कही गई बातों को पढ़ते हैं, अध्ययन भी करते हैं। तब उन्हें समझ में आता है कि पंडितों द्वारा कही गई बातें एक प्रकार की होती हैं, जबकि योगियों द्वारा बताए गए सत्य कुछ और ही होता है।

जब पत्रीजी से परिचय हुआ तो उन्होंने कहा कि मूर्तिपूजा नहीं, सत्याराधना करनी चाहिए। आमतौर पर, इस मूढता और मूर्खता में होने वाले सत्याराधना करने को कहने पर भी उसे छोड़ कर, मूर्तिपूजा को मना क्यों कर रहे हैं? ये ही सोचते हैं। शुरुआत में मुझे भी यही विचार आया।

क्योंकि प्रथा के अनुसार सभी विग्रहाराधना ही कर रहे हैं। इसलिए मैंने वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर बनवाया। वेंकटेश्वर स्वामी मुझे बहुत पसंद हैं। वहाँ हर दिन पूजा करता रहता हूँ, तो पत्री जी ने विग्रहाराधना करने से मना किया। यह क्या हुआ, इन्होंने ऐसा क्यों कहा, यह सुनकर मैं बहुत उलझन में पड़ गया।

लेकिन सत्य के बारे में किसी ने नहीं बताया, इसलिए मैं केवल पूजा करता रहा। जब पत्री जी ने सत्याराधना कहा, तब मैंने सोचा - सत्य का अर्थ क्या है? तब मुझे समझ में आया कि सत्य का अर्थ ही ईश्वर है। जब पत्री जी ने सत्याराधना करने को कहा, तो उसका मतलब ईश्वर की आराधना करने को कहा, लेकिन उन्होंने आराधना छोड़ने को नहीं कहा, है ना? तब मुझे एहसास हुआ कि ईश्वर का मतलब आत्मा है। आत्मा यानी सत्य की आराधना करने का मार्ग 'श्वास पर ध्यान' है। यही विवेक है।

तब मैंने सोचा कि मूर्तिपूजा को क्यों मना किया? सत्याराधना क्यों करने को कहा? आखिर सत्य क्या है? जब मैंने इसका अध्ययन किया, तो मुझे

समझ में आया कि सत्य ही भगवान है, सृष्टि में जो कुछ भी है वही सत्य है, उसी सत्य से सब कुछ उत्पन्न हुआ है। जो कुछ भी उस सत्य से उत्पन्न हुआ है, वो सब अदृश्य होने वाले ही हैं। इसलिए उन्हें असत्य कहा जाता है। एक तरह से कहें तो आंखों से जो कुछ भी दिखाई देता है, वह सब असत्य ही है।

जो आंखों से दिखाई नहीं देता वही सत्य है, जो शाश्वत है वही सत्य है, यह मैंने जाना। यह सब पूर्वजन्म के संस्कार हैं या कुछ और, मुझे नहीं पता। लेकिन मैंने इस तरह जाँच किया तो मैंने जाना कि जो लोग आनंद से जीना चाहते हैं, दुःखों से मुक्त होना चाहते हैं, उन्हें उस स्थिति को पाने के लिए सत्य का आश्रय लेना होगा, अर्थात भगवान का आश्रय लेना होगा, उसके लिए ध्यान करना होगा।

पहले पत्री जी ने पूजा छोड़ने को कहने पर भी, मैं पूजा छोड़ने को डरता था। किसी भी मूर्ति को देखता तो भगवान का रूप मानकर मेरे दोनों हाथ जुड़ जाते थे। दोनों हाथ उस तरह न जोड़ कर, किसी मूर्ति को देखकर बिना प्रणाम किए जाने के लिए मैं बहुत डरता था।

जब सत्य की महानता को मैंने जाना! तब से मैं सत्य का आश्रय ले रहा हूँ, सत्य की आराधना कर रहा हूँ। धीरे से 'सांस पर ध्यान' रखकर ध्यान करने से मेरे अंदर का डर कुछ दिनों के बाद दूर हो गया।

तब से मैंने वही सत्य सबको सिखाना शुरू कर दिया। यह विवेक न होने के कारण बहुत से लोग सत्य से दूर हो जाते हैं। इसलिए गौर से देखेंगे तो मूर्ति पूजा करने वाले तीन प्रकार के होते हैं।

मूर्ति पूजा को प्रथा मानकर करने वाले होते हैं, सब लोग करते हैं इसलिए हम भी कर रहे हैं, बुजुर्गों और विद्वानों के कहने पर हम कर रहे हैं। इसलिए जिन्होंने जाँच करके सत्य को जान कर ध्यान करते हैं, वे ऊँचे गिने जाते हैं।

वैसे ही पत्री जी ने कहा कि मांसाहार मत खाओ। पत्री जी द्वारा बताए गए सत्य लोक विरुद्ध जैसे अर्थात इस लोक में प्रथाओं के विरुद्ध हैं। इसीलिए लोग बहुत भ्रम में होते हैं। जो लोग उनकी बातों को समझने वालों का प्रतिशत बहुत कम है। इसीलिए पंडितों के सभाओं में हजारों,लाखों लोग होते हैं। योगियों के सभा में सैकड़ों लोग ही होते हैं।

अब तो हमारे पास भी बहुत कम लोग ही आते हैं, क्योंकि? हम सत्य बोलते हैं, क्योंकि हम सत्य विपरीत नहीं बोलते हैं। हम आत्मा के बारे में, आत्मा के ज्ञान के बारे में अधिक बताते हैं। हम असत्य देह को, संसार को बहुत कम महत्व देते हैं। लेकिन सारी दुनिया असत्य में ही जी रहे हैं। संसार में जो कुछ है सब असत्य ही है। इसीलिए हम इस पारिवारिक बंधुत्व, संपत्ति को सबसे कम महत्व देते हैं। हम शाश्वत आत्मा, आत्म-ज्ञान, आत्म-उत्थान, आत्म लाभ और आत्म विकास को सर्वोच्च महत्व देते हैं।

यहाँ किसी की कोई गलती नहीं है, हर कोई अपनी स्थाई, समझ के अनुसार आचरण करते हैं। जान लीजिए, जो सत्य का आश्रय लेता है, वह मोक्ष के करीब होता है। जो असत्य का आश्रय लेता है, वह मोक्ष से दूर होता है। जो लोग मोक्ष के करीब आते हैं, वे दुःख से मुक्त होते जाते हैं। जो मोक्ष से दूर होते हैं, वे अधिक दुःखी हो रहे हैं।

इसलिए जैसे बुजुर्गों, योगियों, बुद्ध और पत्री जी ने कहा है कि? इन अंध विश्वासों को छोड़ देना चाहिए। ये अंधविश्वास धार्मिक, जातिगत, पारिवारिक, क्षेत्रीय, यहां तक कि देशीय भी होते हैं।

चलो कुछ उदाहरणों के माध्यम से समझने की कोशिश करते हैं। हिंदू धर्म में अंधविश्वास का एक उदाहरण क्या है? जैसे कि बिंदी लगाना। बिंदी लगाने से पुण्य मिलता है और न लगाने से पाप होता है, ऐसा कुछ नहीं है। यह पूरी तरह से हर किसी की इच्छा पर निर्भर होता है।

यदि वे ईसाई हैं, तो वे सोचते हैं कि बिंदी लगाना पाप है। एक ईसाई जो बिंदी रखता है उसे हीन दृष्टि से देखा जाता है। उस धर्म का अंध विश्वास यह है। अब इसकी जरूरत किसे है? यदि आप बिंदी रखोगे या नहीं, तो इसकी आवश्यकता किसे है? वही मुसलमानों में अंधविश्वास यह है कि औरतों को बुरखा पहनना है। वहां औरतें बुर्का नहीं पहनेगी तो महा पाप मानते हैं यही उनके धर्म का विश्वास है। ऐसे ही, किसी भी धर्म का अंध विश्वास होने वाले, वे उस धर्म के अनुसार आभूषण पहनते हैं।

देखिए, अगर हिन्दू होते हैं तो गले में चेन पहनते हैं, जिसमें हनुमान जी, लक्ष्मी देवी और वेंकटेश्वर स्वामी के लॉकेट होते हैं। वहीं, ईसाई लोग क्रॉस लॉकेट की चेन पहनते हैं। मुसलमान लोग चाँद का निशान पहनते हैं। इसी तरह, हर किसी की अपनी-अपनी आस्था होती है। वैसे ही अंगूठियां भी होती हैं। जिन्हें हर कोई पहनता है। अंगूठियों पर भी धार्मिक विश्वास दिखाई देते हैं।

अगर तुममें कोई विशेषताएँ हैं, तो मानो आप में अंधविश्वास है! क्योंकि सब आत्माएँ ही हैं! सब एक समान हैं! फिर ये भेदभाव क्यों होते हैं? भेदभाव दिखाया जा रहा है, इसका मतलब अंधविश्वास है! यानी अभी सत्य का ज्ञान नहीं हुआ है? इसलिए ही पत्री जी लोगों के हाथों में बंधे धागे उतरवा देते हैं।

जो बुद्ध ने कहा, वही पत्री जी ने करवाया। इसलिए, कौन महान हैं? कौन उत्तम पुरुष हैं? यानी बुद्ध के अनुसार 'जो अंधविश्वासों का अंत कर चुका है' वह महान है, यानी जिसने उन्हें छोड़ दिया है। अगर वे अंधविश्वासों बने रहें, तो कोई खतरा नहीं, बस कुछ और जन्म बढ़ जायेंगे, बस इतना ही। पत्री जी भी यही कहते हैं न चिंता की कोई बात नहीं, जितने जन्म लेने हैं, ले सकते हो।

लेकिन जिनकी यह इच्छा है कि मैं इस दुख से स्थायी रूप से बाहर निकलूं, उन्हें पहले इन अंध विश्वासों से बाहर निकलना होगा।

2) 'मोक्ष प्राप्त करने की तीव्र इच्छा होने वाला':-

बुद्ध ने और क्या कहा? उन्होंने कहा कि 'निर्वाण तत्त्व विज्ञान को जानने वाला'। अर्थात मोक्ष की महानता जानने वाला व्यक्ति।

इसलिए, मोक्ष क्यों? मोक्ष प्राप्त करने से क्या लाभ होता है? मोक्ष की महानता क्या है? यह सब जानने वाला व्यक्ति होना चाहिए। ऐसे व्यक्ति को मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा होती है। ऐसे व्यक्ति को मुमुक्षु कहते हैं।

शंकराचार्य ने जो कहा, शिरडी बाबा ने जो कहा, हर किसी ने वही बताया। तो फिर वो आकांक्षा किसे होती है? अर्थात जो व्यक्ति उसकी महानता को जानता है, जो व्यक्ति उसके लाभ को जानता है।

ऐसा मुमुक्षु की स्थिति में पहुंचने के लिए 350 जन्मों को पार करना होगा। जो 350 जन्मों के भीतर होते हैं, उन्हें मोक्ष प्राप्त करने में आसक्ति नहीं होती। वे हमेशा भोग, सुख, मजों में आसक्ति रखते हैं।

फिर प्रारंभिक जन्मों में, खाने, पीने, सोने के अलावा और कुछ नहीं होगा। सभी जानवर के लक्षण ही होती हैं। जानवरों को देखो, इन तीनों के अलावा क्या उन्हें कुछ और चाहिए? और क्या कोई समस्या भी होगा? अर्थात उससे ज्यादा कुछ नहीं होगा। खाना, पीना, सोना। ऐसे जीने वाले तमोगुण में रहते हैं।

रजोगुण में रहने वाले यह सोचते हैं कि मैं ही सबसे महान हूँ, मुझे महान बनना है। वे दूसरों पर हुकुम जमाना चाहते हैं। जो लोग उनकी बात नहीं मानते, उनके ऊपर उन्हें क्रोध भी आता है। रजोगुण और तमोगुण में रहते हुए वे कई ऐसे काम करते हैं, जिन्हें नहीं करना चाहिए। इस कारण उन्हें कई तरह की मुसीबतें आती हैं।

और कुछ लोगों को देखेंगे तो पत्नी की कमाई भी ले लेते हैं। अब सरकार वाले पेंशन भी दे रहे हैं। उन पैसों को भी घर के पुरुषों को देना पडेगा।

पिता होने पर पिता को देना होगा, पति होने पर पति को देना पड़ता है।

कुछ लोग राजनीतिक पद लेते हैं लेकिन जनता की परवाह नहीं करते। वे कुकर्म करके पैसा कमाते हैं। अंत में ऊपर चले जाते हैं, कमाने के लिए जो कुकर्म किया है वे साथ ही आते हैं। उसकी वजह से और एक जन्म लेकर कई मुसीबतों को झेलना पड़ता है।

इस तरह कुछ जन्म तक मुसीबतों को झेलते हुए सोचते हैं कि ये मुसीबतें क्यों आ रहे हैं। तब धीरे से गुरु को पड़कर अच्छा बनने के लिए, गलतियां करने से फिर मुसीबतें आएंगे ऐसा जानने लगते हैं। अच्छा बनने की कोशिश करते हुए कुछ अच्छे काम भी करते रहते हैं।

सात्विक गुण में आते हैं। धीरे धीरे गलतियां करना छोड़ कर पुण्य कार्य, सत्कर्म करते रहते हैं। बाद में अच्छे जन्म ही आते हैं, मुसीबतें दूर हो जाते हैं, लेकिन जन्म होगा तो बहुत पीड़ाएं होती है, कुछ प्रकार के तकलीफें भी होते हैं।

देखिए प्रकृति वैपरित्य अर्थात तूफान, भूचाल, बाढ़ जैसे आने पर कई तकलीफों को झेलना पड़ता है। उसी तरह युद्ध होने पर कह भी नहीं सकते। वैसे कई तकलीफों को झेलने के बाद क्या करना चाहिए? तब एक सद्गुरु का आश्रय लेते हैं। तब गुरु कहते हैं कि जन्म होने पर तुम्हारी हालत ऐसे ही होगी। इसलिए जन्म न लेने का प्रयत्न करो। तब तुम्हें कोई पीड़ा नहीं होगा। शरीर होने से ही ये सब पीड़ाएँ, शरीर नहीं आएगा तो ये पीड़ाएं नहीं होंगे ना? गुरु बोध करते हैं कि जन्म न लेना ही मोक्ष कहा जाता है। मोक्ष पाने के लिए क्या करना चाहिए उसे भी गुरु बोध करते हैं।

ऐसे लोग जिन्हें इन सबसे पूरी तरह बाहर निकलने, मुझे ये जीवन ही नहीं चाहिए इस तरह की तीव्र कांक्षा, इच्छा होती है वे ही गुरु के कहे अनुसार दृढ़ता और तीव्रता से साधना करते हैं। ऐसे लोगों को ही मुमुक्षु कहते हैं।

तब वह गुरु के माध्यम से मोक्ष अर्थात? मोक्ष पाने के लिए क्या करना चाहिए? मोक्ष पाने से क्या लाभ मिलते हैं? इन सबके बारे में जानेगा।

गुरु उसे कहते हैं, बेटा, मोक्ष अर्थात? फिर से जन्म न लेने की स्थिति, अर्थात जन्म मृत्यु न होने की स्थिति, स्थायी रूप से दुःखों से मुक्त होने की स्थिति। गुरु यह भी कहते हैं कि इसके लिए 'आत्मसाक्षात्कार' प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। ऐसे व्यक्ति को ही 'मुमुक्षु' कहा जाता है।

वह यही चाहता है! इसलिए, जैसा कि सद्गुरु कहते हैं, वह लगन से, तीव्र अभ्यास करते हैं।

उसे ही बुद्ध ने कहा, 'निर्वाण तत्व विज्ञान को जानने वाला'। अर्थात जो मोक्ष के महत्त्व को जान कर, उसी प्रयास में लीन होने वाला । बुद्ध ने यह भी कहा कि ऐसा प्रयास करने वाले ही उत्तम पुरुष हैं।

इसलिए, यदि मनुष्यों में उत्तम बनना होगा? तो केवल मोक्ष की तीव्र कांक्षा होना ही नहीं, बल्कि यह भी जानना चाहिए कि उस प्रयास में लीन होना है। पत्री जी भी कहते हैं कि इसी को आखरी जन्म बनाना चाहिए।

शिरडी बाबा ने कहा कि आत्मसाक्षात्कार पाना हो तो मुक्ति पाने की तीव्र इच्छा होनी चाहिए। अर्थात 'जब कोई यह समझ लेता है कि वह बंधन में है अर्थात उन बंधनों से मुक्त होने का निश्चय लेकर, अर्थात बन्धनो से मुक्त होने के लिए तीव्र निर्णय लेने वाला।'

'अन्य सुखों की इच्छा किए बिना, तीव्र मेहनत करके, आत्म-साक्षात्कार पाने का प्रयास करने वाला आध्यात्मिक जीवन के योग्य होता है,' ऐसा बाबा ने कहा।

ऐसे व्यक्ति को ही बुद्ध ने 'उत्तम पुरुष' कहा है।

इसीलिए मैं कहता हूँ कि 350 जन्मों को पार किए बिना आप

भीमवरम नहीं आ सकते। आप इस "ZOOM" में नियमित रूप से भाग नहीं ले

पाएँगे। आप में मुमुक्षुत्व के लक्षण होने के कारण आप हर महीने, हर दिन इन कार्यक्रमों में नियमित रूप से भाग ले रहे हैं।

आप सभी जानते हैं कि किसी न किसी तरह यह जन्म को पार करने के बाद, फिर एक और जन्म लेना अपरिहार्य है, फिर से समस्याएँ, पीड़ाएँ अपरिहार्य हैं। इसीलिए इतनी श्रद्धा दिखा रहे हैं।

लेकिन क्या करेंगे? काम के दबाव, ज़िम्मेदारियों के बोझ तले कई लोग दबे रहते हैं। सब कुछ जानते हुए भी, इस रास्ते पर आकर भी, कई लोग अपनी इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाते। फिर यह किसके लिए संभव है? बुद्ध ने कहा था कि 'जिसे निर्वाण तत्व विज्ञान को जानने वाला,' वही इस मोक्ष के महानता को समझ सकता है।

यानी निर्वाण कोई सामान्य विषय नहीं है। इसलिए बुद्ध ने उन्हें उत्तम पुरुष कहा अर्थात मनुष्यों में उत्तम कहा। इसका मतलब है कि उस स्तर तक पहुँचना कोई सामान्य बात नहीं है, यह समझना चाहिए।

यानि कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न हों, अगर कोई भीमवरम आ रहा है, तो मतलब बुद्ध ने कहा कि जो 'निर्वाण तत्त्व विज्ञान को जानने वाला' हो सकता है। अर्थात मोक्ष की महानता को समझने वाला ही इतनी दृढ़ता के साथ आ सकता है।

बुद्ध ने जो कहा है, वे साधारण बातें नहीं हैं। हमें भी पुरुषों में उत्तम पुरुष बनना चाहिए। उन गुणों को अपनाना चाहिए। यदि हमारे अंदर कोई कमजोरियाँ या अवगुण हैं, तो हमें उन्हें सुधारने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा करने वाले कुछ भी हासिल कर सकते हैं। भगवद्गीता में भी यही शिक्षा दी गई है कि जो ऐसा प्रयास करते हैं, वे चाहे इस जन्म में न सही, लेकिन अगले एक या दो जन्मों में निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करेंगे।

प्रयास किया जाए, तो बहुत कम जन्मों में ही प्राप्त किया जा सकता

है। इसलिए, यदि उस निर्वाण, मोक्ष को प्राप्त करना है, तो उसकी महानता को समझना होगा। जब थोड़ा सा भी अनुभव पूर्वक मालूम होगा, तो इच्छा और भी अधिक हो जायेगा।

3) पारिवारिक बंधनों से बाहर होने वालाः-

इसी तरह हमें जानना है कि बुद्ध 'भव बंधनों से बाहर होने वाला' अर्थात 'पारिवारिक बंधनों से बाहर होने वाला'। अर्थात परिवार को छोड़कर हिमालयों या जंगलों को जाने वाला नहीं।

बहुत से लोग ऐसा सोचते हैं, लेकिन यह समझना चाहिए कि परिवार पर ममत्व को छोड़ने वाला। कई लोग सोचते हैं कि पत्नी को छोड़ना, पति को छोड़ कर चले जाना। लेकिन उनके प्रति ममत्व को छोड़ना चाहिए। उसी तरह पढ़ाई छोड़ना नहीं, नौकरी छोड़ना नहीं, कमाई को छोड़ना नहीं। सब कुछ होना चाहिए, लेकिन उनके प्रति ममत्व नहीं होना चाहिए। अर्थात जीवन में ऐसे जीना जैसे कमल के पत्ते पर पानी की बूँद। यदि आप ध्यान दें, तो पानी की बूँद कमल के पत्ते पर रहती है, लेकिन उसे छूती नहीं, उससे चिपकती नहीं।

पारिवारिक जीवन में पति पत्नी के साथ रहता है, पत्नी पति के साथ रहते हैं। वे अपने बच्चों के साथ रहते हैं, सबकी जरूरतों का ख्याल रखते हैं। लेकिन अगर उनके साथ कुछ हो जाता है, तो वे दुःखी नहीं होते, रोते नहीं, और दुःखी नहीं होते कि 'यह हमारे लोगों के साथ ऐसा क्यों हुआ।' लेकिन वे उनकी जरूरतों का ख्याल रखते हैं और आवश्यक सेवाएं करते हैं।

देखिए, मेजर बच्चे अपनी जिंदगी के निर्णय खुद नहीं ले सकते क्या? उन्हें क्या चाहिए, ये उन्हें पता नहीं क्या? उन्हें क्या पढ़ना है, उनको पता नहीं क्या? कब शादी करनी है, यह उन्हें पता नहीं क्या? लेकिन माता-पिता को उनके प्रति ममत्व नहीं खोते।

इसलिए कई लोग कहते हैं कि हमारा बेटा शादी करने को बोलने पर भी नहीं कर रहा है। कुछ लोग इस बात से दुःखी होते हैं कि उनके बच्चे बिना

बताए ही शादी कर लिया। चाहे परिस्थिति कुछ भी हो दुःख तो अपरिहार्य है। ऐसा कौन दुःखी होता है जिस को ममत्व होता है।

बुद्ध ने कहा कि वे लोग अपने पारिवारिक बंधनों से मुक्त नहीं हो पाए हैं, वे अज्ञानता में ही हैं। इसी कारण आदि शंकराचार्य ने कहा है कि?

माता नास्ति, पिता नास्ति,
नास्ति बंधु सहोदरः।
अर्थ नास्ति, गृहं नास्ति,
तस्मात् जाग्रत जाग्रत ।।

ताः माता, पिता, रिश्तेदार, भय्या-भाई, धन, घर ये सब मिथ्या अर्थात माया है! ये सब वास्तव में नहीं है। इसलिए, हे मानवों, सावधान से रहो ऐसा शंकराचार्य जी ने कहा।

मिथ्या अर्थात माया अर्थात जो नहीं है वे हैं जैसे दिखाई देना। जो नहीं है वह है करके समझते हो। चाहे माता हो, चाहे पिता हो, भय्या भाई हो, रिश्तेदार हो, गृह हो जैसे ये सब हैं ऐसा समझते हो। लेकिन वे सब नहीं है।

जो नहीं है उन पर ममत्व क्यों बढ़ा रहे हो। ममत्व से जो नहीं करना चाहिए वह सब काम कर रहे हो। अधर्म से व्यवहार कर रहे हो। सृष्टि के विरुद्ध काम कर रहे हो। उनके फल स्वरूप मुसीबतों को ला रहे हो। तकलीफें आ रहे हैं, तकलीफें आ रहे हैं ऐसा दुःखी हो रहे हो।

भगवान मुझे कितनी तकलीफ़ें दे रहे हैं? ऐसा कहकर तुम भगवान की निंदा कर रहे हो। जो है ही नहीं उन्हें है जैसे सोचने को किसने बोला? उनके लिए जो कुकर्म नहीं करना चाहिए उसे करने को किसने कहा? मुसीबतों को कौन लाने को बोला? किसने दुःखी होने को बोला?

भगवान ने ही सब कुछ किया इस तरह भगवान की निंदा क्यों कर रहे हो? कितना कहने पर भी तुमको समझ नहीं आ रहा है ना। इस शरीर को

छोड़ने के बाद माने मरने के बाद ऊपर से सहायक आते हैं। तुम्हें ऊपर के लोकों में ले जाते हैं। तब पता चलेगा। ये क्या मैंने सोचा कि मेरे साथ बहुत लोग हैं। एक भी मेरे साथ नहीं आ रहा है, कितने आश्चर्य की बात है? सबके साथ मैं बातें करता था, सभी के साथ में घूमता था, पत्नी से, पति से मिलकर पारिवारिक जिंदगी बिताया। अब वे सब यहां क्यों नहीं है ऐसे आश्चर्यचकित होते हैं।

जिस बच्चे के लिए आप संघर्ष करते हो! जिसके लिए दुःख सहते हो! जिस पैसे के लिए अधर्म व्यवहार किया! पाप किया हो! जिन रिश्तेदारों के लिए आपने अपने कामों को छोड़ दिया! अब वे सब कहाँ हैं? इसलिए बुजुर्गों एक कहानी बताते हैं।

मरे हुए इंसान को दोनों यमदूत दोनों हाथों को पकड़कर ले जा रहे थे। तब इसने बोला अरे, ज़रा एक बार रुकिए। यमदूतों ने कहा, हम रुक नहीं सकते, हमें जाना ही होगा। फिर वह बार-बार विनती करने लगा। कृपया, बस एक बार रुक जाइए। जब उसने बहुत बार अनुरोध किया, तो यमदूत मान गए और रुक गए। तब उस व्यक्ति ने पीछे मुड़कर देखा। पीछे मुड़कर देखने पर उसने पाया कि उसके पीछे से कोई भी उसके लिए नहीं आ रहा है। तब उसने यमदूतों से कहा, 'ठीक है, चलो। यमदूतों ने हैरानी से पूछा, अरे भाई, इतनी देर से तू हमें क्यों परेशान कर रहा था? आखिर क्या वजह थी?

नहीं, नहीं, जब मैं था, मैंने बहुतों के लिए मेहनत की, कई पाप किए, गलतियाँ कीं। इस समय मैंने देखा कि क्या कोई मेरी मदद के लिए आ रहा है, लेकिन कोई नहीं आया। अब समझ में आया कि मैंने उनके लिए पाप किए। आखिर में देखा तो वे लोग नहीं आए, लेकिन पाप मेरे साथ आ रहे हैं। जो कुछ मैंने अपना समझा, वह सब मिथ्या, माया है। यह मुझे समझ में आ गया। अब एहसास हुआ कि मैंने बेकार के कर्मों की गठरी बांध लिया है।

इसलिए पाप मत करो, कर्मों को मत बढ़ाओ, जन्मों को मत बढ़ाओ,

दुःखों को मत लाओ, सावधान रहो, ऐसा शंकराचार्य जी कहते हैं। इसे जो समझ लेता है, वह भाग्यशाली, महान ज्ञानी है। जो नहीं समझता, वह अज्ञानी है और उसे कई जन्मों को लेना होगा।

समझने वाला व्यक्ति भाग्यशाली होता है, और आप सब ऐसे ही लोग हैं। इसी कारण आप भीमवरम को नहीं छोड़ते, चाहे क्लास कहीं भी हो, आप उसे भी छोड़ते नहीं। जितनी कठोर साधना करोगे, तब आप माया से बाहर निकल पाएंगे। जब तक माया में हो, तब तक ये सब रहेंगे जैसे समझोगे।

वो क्या है कि लोग कहते हैं कि कुछ नहीं है, लेकिन सब कुछ है। मेरे पास सब कुछ है, मैंने अपने हाथों से अपना घर बनाया है। आप सोच भी नहीं सकते कि मैंने कितने करोड़ खर्च किए हैं। इस तरह वह बात करता है। ऐसा लगता है जैसे कि वो घर उसी का है, वह घर आए सबको बुलाकर दिखाता है। इसलिए, आध्यात्मिकता में आगे बढ़ना है, ज्ञान प्राप्त करना है तो पहले परिवार के बंधन से मुक्त होना चाहिए।

जो महत्वपूर्ण है उसे समझ लिया जाए तो बाकी सब अपने आप आ जाता है। परिवार के बंधन से जो बाहर आ जाता है, बुद्ध ने उसे उत्तम पुरुष कहा है। याद रखिये, जो ममत्व को छोड़ देता है, वही उत्तम पुरुष है। बुद्ध ने जो कहा, आदि शंकराचार्य जी ने भी वही कहा! कितने महान लोग थे वे, वे यूँ ही तो नहीं कहते ना?

कोई भी उत्तम पुरुष अर्थात जो बहुत उन्नत हो, जो बहुत बुद्धिमान हो, जिसने ज्ञान अर्जित किया हो इस तरह कहलाने को देखना चाहिए। जब कोई इस मार्ग पर आता है, तो उसे इसी प्रकार प्रयास करना चाहिए। जब मेरा परिचय पत्रीजी से हुआ, तब मेरे अंदर भी वही दृढ़ता था।

पत्री जी की जब भी कोई मीटिंग होती थी, तो 'सीनियर मास्टर्स' कहकर कुछ लोगों को मंच पर बुलाते थे। शुरुआत में, यानी मीटिंग के स्टार्टिंग

में, उनसे बात करवाते थे। मुझे उस समय ऐसा लगता था इन्होंने कौन सी बड़ी बातें कह दी? इन्होंनेकौन से महान विषयों को बताया है, इन्हें 'सीनियर मास्टर्स' कहकर मंच पर क्यों बुलाया गया? क्या हम उनसे कम हैं? ऐसा मैं मन ही मन सोचता था।

मुझे भी उनकी नजर में सीनियर मास्टर कहलाने की दृढता पैदा हुई। मैंने मेहनत किया, संघर्ष किया, साधना किया, किताबों को अच्छे से पढा, क्लासेस बताने का भी अच्छा अभ्यास किया। धीरे-धीरे कुछ जगहों पर मुझ से बताई गई क्लासेस सुनने वालों ने पत्री जी जब उनके गांव में आने पर उन्होंने कहा कि, राघवराव जी आए थे, उन्होंने बहुत अच्छा बताया। इस तरह, पत्रीजी को यहां-वहां जाने पर उन गाँवों के लोगों ने कहा था।

देखिए, चावल कैसा है यह जानने के लिए सिर्फ एक दाना ही काफी है। इसी तरह, किसी सब्जी, चटनी या सांभर का स्वाद जानने के लिए थोड़ा सा चखना ही काफी होता है। इसी तरह, पत्री जी भी सबकी बातों से, व्यवहार को देखकर समझ लेते हैं। धीरे-धीरे उन्होंने मुझे भी मंच पर बुलाना शुरू किया, इसी तरह धीरे से मैं उनकी नजरों में आया।

बाद में किताबें लिखना, भीमवरम में तीन दिन की कक्षाएं आयोजित करना, उन कक्षाओं का बहुत सफलतापूर्वक संपन्न होना, उनमें से कई लोगों का मास्टर के रूप में आगे बढ़ना, यह सब देखकर उनकी नजरों में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में पहचान बनाना हुआ। ऐसे उत्कृष्ट व्यक्ति के रूप में आगे बढ़ने के लिए हमें क्या करना चाहिए, यह बुद्ध ने बताया था।

इतना ही नहीं बुद्ध ने पारिवारिक बंधनों से बाहर आने को कहा, बल्कि शंकराचार्य जी ने भी 'भज गोविंदम' में यही उपदेश दिया। इसका अर्थ यह है कि पत्नी, पति, बच्चों के प्रति ममत्व नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा है कि?

काते कांता कस्ते पुत्रः

संसारो यमतीव विचित्रः।
कस्य त्वं कः कुत आयातः
तत्वम चिंतय तदिह भ्रातः।।

अरे भाई, कौन है तुम्हारी पत्नी? कौन है तुम्हारा पति? कौन है तुम्हारा पुत्र? यह संसार अत्यंत विचित्र है। यह सब माया है... ऐसा लगता है मानो यह सब वास्तविक हो, लेकिन अंत में कुछ भी नहीं रहता। यही विचित्रता है। तो आखिर तुम किसके हो? सोचो। तुम यहाँ कहाँ से आए हो? शंकराचार्य जी ने कहा है कि यदि तुम इस तत्व विचारण करोगे, अर्थात आत्मा विचारण करोगे, तो तुम्हारे सभी भ्रांति, मोह चकनाचूर हो जाएंगे।

इसका मतलब है कि हमें सोचना चाहिए। यदि हमें इन भव बंधनों से अर्थात इस परिवारिक बंधन से बाहर आना हो अर्थात ममत्व को छोड़ देना चाहिए अर्थात इन सब पर विचार करना चाहिए। तुम्हारी पत्नी कौन है? तुम्हारे पति कौन हैं? तुम्हारे पुत्र कौन हैं? सोचो! सभी आत्माएँ ही हैं। वे आत्माएँ विभिन्न लोकों से आई हैं। वे क्यों आये हैं? क्या करने के लिए आये हैं? इन सब पर विचार करना चाहिए।

वही बातें हम बार-बार बता रहे हैं। क्योंकि कितने बार बताने पर भी हम में जो ममत्व है दूर नहीं हो रहा है। इसलिए हम बार-बार याद कर रहे हैं। तुम्हें लगता है कि तुम्हें बेटा हुआ है। लेकिन वह पिछले जन्म में एक बूढ़ा आदमी था, जिसने अपना शरीर छोड़ दिया। वो उससे पहले उसने अपनी मूर्खता से बहुत लोगों को दुःख दिया, उन्हें रुलाया।

रुला, रुलाकर मर गया। मरते समय उसकी आत्मा बाहर निकलती है। वह ऊपर के लोकों में कुछ समय बिताकर फिर से जन्म लेने के लिए तुम्हारे गर्भ में घुस गया। आखिर वह कौन है? इससे पहले उसने कई लोगों को दुःख देने वाला ही अब तुम्हारे गर्भ में घुस गया। उसे तुम अपना बेटा, अपनी बेटी समझ रहे हो। तुम उनके प्रति बहुत ममत्व बड़ा रहे हो।

पत्री मैडम ने एक बार एक विषय बताया। जब मेरे मैडम का फैर एक्सीडेंट हुआ तब अस्पताल में थी। तब पत्री जी ने कहा कि पत्री मैडम को अस्पताल ले जाओ। तब पत्री मैडम हीलिंग करती थी। तब मैडम ने पिरामिड लाकर मेरी मैडम के बिस्तर पर रखकर ध्यान करवाती थी।

मैं ही कार में जाकर पत्री मैडम को कार में लेकर आता था। तब पत्री मैडम ने एक विषय बताया। एक परिवार में उनके बेटे को हमेशा पूरे शरीर में तीव्र दर्द, खुजली होती थी। उसको नारियल तेल लगाने पर अच्छे से रहता था। अगर नारियल तेल नहीं लगाया तो जमीन पर लुढ़क लुढ़क कर हंगामा करता था। फिर से तेल लगाते थे। इस तरह हमेशा तेल लगाते ही रहते थे।

कितने डॉक्टरों को दिखाने पर भी ठीक नहीं हुआ। इसको ऐसी बीमारी क्यों आया? उनको समझ में नहीं आया। बाद में कुछ दिनों के बाद मैडम को पता चला कि वह लड़का पिछले जन्म में उनका दुश्मन था। उन से बदला लेने के लिए ही उनको उनके बेटे के रूप में जन्म लेकर इस तरह बदला ले रहा था। दरअसल में उसे लड़के को कोई बीमारी नहीं है, उनको ऐसा रुलाने के लिए ही वह ऐसा नाटक करता था, बाद में धीरे से समझाने पर ठीक हो गया।

इसलिए मेरे बच्चे मेरे बच्चे ऐसा सोचते हो। लेकिन जान लो कि दुश्मन भी बेटों की तरह आ सकते हैं। कुछ लोग जान बूझकर जायदाद को बर्बाद भी कर देते हैं, इसलिए ममत्व को छोड़ दीजिए।

सभी कुछ इच्छाओं से पाठ्कों को सीखने के लिए आए हुए आत्माएं हैं। इसलिए मेरा बेटा मेरी बेटी ऐसा सोचोगे तो आप गलती कर बैठे जैसे दाल में पैर डालना। इसीलिए शंकराचार्य जी ने कहा है कि असल में तुम कहां से आए हो? वह कहां से आया? दरअसल यह परिवार ही विचित्र है। इसलिए उन्होंने इस तत्व विचारण करने को कहा।

इसलिए आप देखोगे तो कुछ पति पत्नी हमेशा झगड़ते रहते हैं। कितना भी बताओ, कितना अच्छे से समझाने पर भी उनमें बदलाव नहीं आता

है। मैं इतना अच्छा होने पर भी वह ऐसा क्यों है? यह वैसी क्यों है? इस तरह सोच कर बहुत दुःखी होते हैं। वे इन से उनसे बताते रहते हैं।

वैसे ही कुछ लोग पहले दोस्ती करके उपकार पाकर आने वाले भी होते हैं। वे बहुत प्यार से मिलजुल कर रहते हैं। जैसे तरह-तरह के जिंदगी होते हैं। इसलिए इन सबको जानना चाहिए। कुछ भी पता किए बिना यह मेरी पत्नी, यह मेरा पति, यह मेरा बेटा इस तरह सोचोगे तो आप ने दाल में पैर डाला। इसलिए शंकराचार्य जी ने कहा है कि यह परिवार बहुत विचित्र है।

इसलिए बुद्ध ने कहा कि इस विचित्र परवारिक बंधन से बाहर होने वाला ही उत्तम पुरुष है। शंकराचार्य जी ने भी तत्व विचारण अर्थात आत्मा विचारण करने को कहा है। तब तुम्हारे सभी भ्रांति, मोह चकनाचूर हो जाएंगे, ऐसा उन्होंने कहा।

इसलिए जो बुजुर्ग पिछले जन्मों को देखा है, उन्हें सभी मालूम होता है। लेकिन हमें कुछ भी मालूम नहीं पर जो नहीं चाहिए यूं ही उसके लिए दुःखी हो रहे हैं, अनावश्यक महत्व को बढ़ा रहे हैं। इसलिए विचरण करके इन भ्रांति मोहों को अर्थात मेरा बेटा, मेरी बेटी, मेरी पत्नी, मेरा पति इन सबको छोड़ दो। जान लीजिए कि ध्यान करने से यह सब अपने आप चले जाते हैं।

तब तुम ये पारिवारिक बंधनों से बाहर आ जाते हो। इस प्रकार सोच कर जब ममत्व को छोड़ देगा वही उत्तम पुरुष है। इसलिए उनके साथ रहोगे तो कुछ अनुभव, कुछ पाठ सीखेंगे।

क्योंकि शारीरिक बंधन होने के कारण उनको कुछ जरूरत पड़ने पर सब कुछ देखते हैं। देखना भी चाहिए, उनकी जरूरतों को पूरा करना चाहिए। तुम्हारे मां-बापने जैसे तुमको पाला है वैसे ही तुमको उन्हें पालना चाहिए। पंखों के आने के बाद पक्षी अपने बच्चों को जैसे बाहर भेज देती है आप भी अपने बच्चों को स्वेच्छा देनी चाहिए। उनकी जिंदगी अच्छा हो या बुरा हो, उनसे किए गए कर्मों के अनुसार ही उनकी जिंदगी होती है। उनके माथे की लिखित को

आप कोई बदल नहीं सकते।

और एक विषय, बहुत पाप किया, बहुत लोगों को धोखा दिया, अधर्म मार्ग में धन कमाया। वह फिर से जन्म लेने के बाद, कुछ भी काम करने पर सफलता नहीं मिलती, मार पड़ती है अर्थात नुकसान होता है। नुकसान होने पर भी फिर से 5 लाख या 10 लाख देकर इस बार सावधानी से करो, ऐसे बोलने पर भी उसके सिर के ऊपर शनि मारता रहता है तो कैसे वो आगे बढ़ पाएगा?

आप दुःखी होंगे तो आप क्या कर पाएंगे। अगर और उधार लेकर दस लाख और दे भी दें, तो वो भी खत्म हो जाएंगे। ऐसे लोग बहुत सारे हैं। इसलिए, उसे उसकी जिंदगी जीने दें। आप उसे सुधार नहीं सकते। उसके कर्म ही उसे सुधारेंगे। कुछ लोग भूतकाल में कुछ नहीं किया होगा, लेकिन अब तो किया जाना चाहिए।

इसलिए याद रखें कि महान लोगों द्वारा कही गई हर बात महान होती है। उन्होंने जीवन के सार को उबालकर छान के हमें दिया है। हमें थोड़ा ध्यान देकर उन्हें समझना चाहिए और अपने जीवन में अपनाना चाहिए। तभी जीवन आनंदमय होगा। नहीं तो आप हमेशा दुःखी रहेंगे और सोचेंगे कि मेरी जिंदगी ऐसा क्यों हो गया कहके और दुःखी होंगे।

इसलिए अत्यधिक ममत्व उपयोगी नहीं है। ये ममत्व यदि हो, तो मरने के बाद भी पृथ्वी को छोड़ नहीं पाते और प्रेतात्मा बन जाते हैं। चलो क्या सच में हमारा उनके साथ कोई संबंध है? वे आत्माएं हैं, हमें नहीं पता वे कहाँ से आये हैं। हम भी आत्माएं हैं, और हमें यह भी नहीं पता कि हम कहाँ से आए हैं। फिर सभी को अपनी-अपनी रास्तों पर जाना ही होगा! लेकिन ममत्व के कारण बहुत नष्ट हो जाता है। इसलिए, परिवारिक बंधनों से बाहर निकलना है।

पारिवारिक बंधनों से बाहर निकलने के लिए शंकराचार्य जी से कहे

विषयों की हम र्चचा कर रहे हैं।

काते कांता धनगत चिंता
वातुल किं तव नास्ति नियंता
त्रिजगति सज्जन संगतिरेक
भवति भवार्णाव तरणे नौक

तात्पर्यः अरे तुम्हारी पत्नी कौन है? तुमको हमेशा धन की चिंता रहती है क्या? और कोई चिंता नहीं है क्या? क्या तुम्हें सही मार्ग पर चलाने वाला कोई नहीं है?

शंकराचार्य ने कहा है कि यदि तुम समुद्र जैसी परिवार के बंधनों को पार करना चाहते हो, तो यह जान लो कि केवल सज्जन संगति ही वह नौका है, जिससे समुद्र जैसे परिवार को पार किया जा सकता है।

शंकराचार्य जी ने क्या कहा है कि? परिवार जैसे सागर में फंसे हुवे हो। क्या करना है? किस दिशा में जाना है? दिशा का पता नहीं है। जैसे समुद्र में फंसने वाला उसकी परिस्थिति नहीं जानता कि वो किस दिशा में है।

इसलिए तुम पत्नी कहते हो, और पति कहते हो। असल में, कौन तुम्हारी पत्नी है? कौन तुम्हारा पति है, पहले इस बारे में सोचो। वे आत्मा हैं! तुम भी आत्मा हो! कहाँ से आए हो? ऊपरी लोकों से आए हो। किसके लिए आए हो? उनकी योजना अलग है, तुम्हारी योजना अलग है। कोई भी हो, सभी आत्माएँ हैं, और आत्मा का उद्देश्य अपने लक्ष्य तक पहुँचना है, इसके लिए ही वे यह शरीर लेकर आते हैं।

इसलिए उसके बारे में सोचो? बस इतना ही पैसे, भोगों और कमाई के बारे में सोचने के अलावा कोई विचार है क्या तुम्हारे पास?

शंकराचार्य जी ने कहा कि संसार में कामना, एंजॉय करना अर्थात एर्निंग, एंजॉयमेंट के सिवाय तुम्हें सही मार्ग में चलाने वाला कोई नहीं है?

और उन्होंने कहा है कि तुम इस परिवार के सागर में फंस कर दुःख में डूब गए हो। और इस परिवार के सागर में से बाहर निकलना अर्थात तीनों लोकों में ढूंढने पर भी, इस सागर को पर करने वाला सज्जन संगति ही है।

उन्होंने कहा सज्जन अर्थात सत् जन, जो सत्य के बारे में कह सकते हैं उनकी संगति। सत्यम अर्थात आत्मा, आत्म ज्ञान बोध करने वाले की संगति इसके सिवाय और कोई जहाज नहीं है। उन्होंने इस परिवार की तुलना सागर से किया। सागर को पार करने के लिए जहाज चाहिए। कैसी जहाज? उन्होंने कहा कि सज्जन संगति अर्थात सत्य के बारे में बोध करने वाले, अर्थात आत्मा के बारे में आत्मज्ञान के बारे में बोध करने वाले के सिवाय और किसी से नहीं होगा।

कुछ लोग बीमारियों से बाहर आने के मार्ग बताते हैं। वे सज्जन कैसे हो सकते हैं? और कुछ लोग मन की इच्छाओं के बारे में संकल्प रखवाते हैं। लेकिन मन सत्य नहीं है ना।

इसलिए इस परिवार जैसे सागर को सज्जन संगति ही पार करवा सकते हैं। जानना चाहिए कि सत्य के बारे में अर्थात आत्मज्ञान का बोध करने वाले ही पार करवा सकते हैं।

और जैसे कि बुद्ध ने कहा है की उत्तम पुरुष बनना है तो इस परिवार के बंधन से बाहर निकालना होगा। इसके लिए क्या करना है उसके बारे में शंकराचार्य जी ने कहा। इस विषय को पत्री जी ने बहुत बार कहा 'त्रिजगति सज्जन संगतिरेक भवति भवार्णाव तरणे नौक'। अभी हम सब भी यही काम कर रहे हैं, बहुत श्रद्धा से कर रहे हैं, क्यों नहीं पार कर पाएंगे, जरूर पार करेंगे।

क्यों श्रद्धा कह रहे हैं? सुबह 3:00 बजे या 3:30 बजे को उठ कर स्नान करके ध्यान में बैठनाकोई साधारण बात नहीं है। जो कुछ बताते हैं सब लिख रहे हैं। बार-बार पढ़ रहे हैं, उनका आचरण करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

बुद्ध ने उत्तम पुरुष के बारे में कहा है।

योगी वेमाना ने कहा है कि

उप्पु कप्पुरंबु नोक्क पोलिक नुंडु
चूड चूड़ रुचुलु जाड़ वेरू
पुरुषुलंधु पुण्य पुरुषुलू वेरया
विश्वधाभिराम विनुर वेमा

वेमना ने कहा है कि नमक, कर्पूर देखने पर एक ही तरह के होते हैं। लेकिन उनके स्वाद में बहुत अंतर होता है। वैसे ही सभी मानव देखने में एक तरह से दिखते हैं। लेकिन उनकी बुध्दि ज्ञान देखे तो बहुत अंतर होता है। वेमना ने कहा है कि बाहर से देखेंगे तो सभी एक जैसे दिखते हैं लेकिन उनमें पुण्य पुरुष अलग होते हैं।

वैसे ही बुद्ध ने पुरुषों में उत्तम पुरुष के बारे में बताया।

मुझे 2002 नवंबर में पत्री जी से मुलाकात हुई। इस वर्ष दिसंबर के अंत में विजयवाड़ा में यज्ञ किया गया था।

दिसंबर में मैंने अपने घर के ऊपर पिरामिड का निर्माण किया था। उस यज्ञ में पत्रीजी को पिरामिड ओपेन करने के लिए आमंत्रित किया। यज्ञ होने के बाद उन्होंने आकर पिरामिड ओपेन किया। घर के ऊपर उनके क्लास का आयोजित किया। तब उन्होंने मुझे बगल में बिठाकर विमाना से कही गई इस पद्य को गाया। मुझे समझ में आया कि उन्होंने मेरे लिए ही वेमन पद्य को कहा।

उन बातों से प्रेरित होकर मैंने और अधिक मेहनत किया। मेरे खासियत को दिखाने के लिए मैंने और मेहनत किया। उनसे कहीं गई एक बात मुझ में बहुत बदलाव लाया। मुझ में खासियत नहीं होगा तो वे क्यों कहेंगे। मुझ में तो कुछ है, यह दिखाने के लिए मैं और भी अधिक मेहनत की।

मैं पिछले 20 सालों से जो मेहनत कर रहा हूँ वो सभी को मालूम नहीं।

लेकिन सभी कहते हैं कि आपने कारण जन्म लिया है, यह सब पूर्व जन्म का सुकृत कहकर एक सर्टिफिकेट देते हैं। सभी सोचते हैं कि हमको वो सुकृताएं नहीं है इसलिए हम इस तरह हैं।

20 सालों से व्यवसायों को छोड़ दिया, परिवार को दूर रखकर, मेरे सभी पदों को इस्तीफा देकर, सभी कार्यों को छोड़कर, पूरी तरह से इस पर ध्यान केंद्रित किया, बिना समय बर्बाद किए, कड़ी मेहनत से काम करके आगे बढे हैं ना? बताईए? मुझे पिछले जन्म के संस्कार नहीं है, मुझसे ये सब कैसे होगा? अगर आप इसे नजरअंदाज करते हैं, तो आप कैसे आगे बढ़ेंगे? वैसे ही रह जाएंगे।

उनके साथ हम कैसे तुलना कर सकेंगे? ऐसे सोचते हुए प्रयत्न ही नहीं करते। 'यद्भावम तद्भवति' जैसे कहते हैंवैसे ही रह जाते हैं। लेकिन आप भी अब मेहनत करने पर क्यों नहीं बनेंगे?

कोई भी महान पिरामिड मास्टर बनना हो तो 18 आदर्श सूत्रों का पालन करना चाहिए। लेकिन ध्यान करने वाला पिरामिड मास्टर नहीं होते। उसमें पहले पॉइंट सही ध्यान करना, सही ध्यान करवाना।

सही ध्यान अर्थात 'सांस पर ध्यान'। जिसे पत्री जी ने कहा, बुद्ध ने भी यही कहा।

अभी बहुत लोग म्यूजिक लगाकर ध्यान कर रहे हैं। कुछ लोग गइडिंग कर रहे हैं। लेकिन 'सांस पर ध्यान' करने वाले कम हो गए हैं। पत्री जी ने क्यों सही ध्यान कहा? क्योंकि कई गलत ध्यान हैं।

गलत ध्यानों को छोड़कर, सही 'सांस पर ध्यान' रखकर ध्यान करने वाले महान बनते हैं। हर विषय को गहराई से अध्ययन करने की शक्ति उसको आती है।

हमारी मैडम फुर्सत मिलने पर वैसे ही घंटों घंटों ध्यान में बैठ जाती है।

यदि ध्यान करना हो तो उस तरह करना चाहिए, क्यों नहीं बढ़ोगे ? आप में कुछ बदलाव आने तक मेहनत करिए। जो सुना है उसका आचरण करना हो तो बुद्धि का विकसित होना जरूरी है। आप की बुद्धि विकसित नहीं हुआ तो कितना कहने पर भी सुनेंगे... लेकिन बदलाव नहीं आएंगे।

इसलिए हमको पिछले जन्म की सुकृत नहीं होने पर भी इस जन्म में विशेष रूप से मेहनत करके भविष्य में सुकृत को बना सकते हैं। याद रखिए पिछले जन्म का सुकृत ही नहीं इस जन्म का सुकृत भी होता है। इससे पहले के जन्म में जो शरीर है उससे मेहनत किया, वो भी आया। ऐसे ही इस शरीर से मेहनत करोगे तो वह इस जन्म में भी उपयोगी है, पुनर्जन्म के लिए भी उपयोगी है।

एक विषय को याद रखिए आपको जो काम करते समय तुम्हारे अंदर से आनंद आपको होती है! ये वे काम हैं जिन्हें आपने अपने जीवन योजना में चुना है। आपको जानना चाहिए कि जो काम करते समय आप में अंदर से दुःख होता है वो आपके योजना के विरुद्ध आप ने चुना है।

यह आपका अंतर्मन को ध्यान से देखेंगे, तो आपको समझ में आएगा। कौन से काम करते समय आपको आनंद मिलता है! ऐसे कामों को करने के लिए टॉप प्रयारिटी देना चाहिए । तब आपकी जिंदगी बहुत सफल हो जाएगी।

जो कार्य करते समय आपको दुख या पीड़ा का अनुभव होता है, उन कार्यों को छोड़ दीजिए। आपकी जिंदगी में सफलता क्यों नहीं आएगा? इसलिए अपने अंतर्मन पर ध्यान होना चाहिए। यह बात तीव्र ध्यान साधना करते समय और स्पष्टता से जान सकते हैं।

बुद्ध ने कहा कि हर एक को उत्तम पुरुष की तरह बढ़ना चाहिए। केवल जीना ही नहीं है, सभी लोग जीते हैं, लेकिन मानवों में सबसे उत्तम जैसे बढ़ना चाहिए।

बुद्ध ने कहा है कि भव बंधनों से अर्थात पारिवारिक बंधनों से बाहर निकलने वाला है। बहुत सारे लोग इसी पारिवारिक बंधन में ही बंधे रहते हैं! हर समय बस मेरा बेटा, मेरी बेटी, मेरा पोता-पोती के अलावा और कुछ नहीं। हर समय उनकी पढ़ाई, उनकी नौकरियां, उनकी शादियां और उनके बच्चे के अलावा कोई और सोच ही नहीं होती।

हम आत्मा हैं, लेकिन आत्मा के लिए, आत्मा के लाभ के लिए, आत्मा की उन्नति के लिए, आत्मज्ञान के लिए हम सोचते नहीं हैं, मेहनत भी नहीं करते। आत्मा लाभ के लिए ध्यान नहीं करते, ध्यान कार्यक्रमों में भाग नहीं लेते, और जीवनभर इसी तरह बिताते हैं। इसका मतलब है भव बंधनों में फंसा होना! ऐसे व्यक्ति को उत्तम पुरुष नहीं कहते हैं। बुद्ध ने कहा कि जो व्यक्ति परिवार में रहने वालों पर ममत्व छोड़कर, आत्मा के लिए मेहनत करने वाले ही उत्तम पुरुष है।

इन भव बंधनों में फंसा नहीं रहना चाहिए, ऐसा भी शंकराचार्य जी ने कहा था। शंकराचार्य जी कितने महान व्यक्ति हैं। ऐसे महान शंकराचार्य जी ने जो कहा है, यदि वो समझ में न आए तो इनको क्या कहना चाहिए? वे कहते हैं कि जन्म व्यर्थ न करो। जन्म का सही उपयोग करो, यही वे कह रहे हैं।

फिर किसी महान व्यक्ति की तस्वीर रखकर लोग कहते हैं, मुझे ये परेशानी आई है, मुझे ये समस्या आई है, मेरी बेटी की परिस्थिति ऐसी है, मेरे बेटे की शादी नहीं हुई, नौकरी नहीं मिली। और फिर पूछते हैं कि हमारी पोती ऐसी है, अब आप ही बताइए क्या करें? ऐसे में तस्वीर की पूजा करते हैं, प्रसाद रखते हैं, और कहते हैं, स्वामी मुझे किसी भी तरह इस मुश्किल से बचा लो कहते हुए मन्नत करते हैं।

लेकिन अगर महान लोगों ने जो कहा उसे बिना समझे, आचरण किए बिना, उसी अंधविश्वास में चलते रहे, तो नुकसान किसका होगा? दुःखी कौन होगा? पूरी ज़िंदगी दुःख में ही बीतेगी। पैसा होगा, सारी सुविधाएँ होंगी, लेकिन

दुःख, तकलीफ़ और अशांति खत्म नहीं होगी। यही जीवन है। सोने जाएँ तो नींद नहीं आती। क्योंकि महान लोगों ने एक कहा, और ये दूसरा करते हैं।

शंकराचार्य जी ने कहा है कि?

कस्त्वं कोहं कुत आयतः
का मे जननी को मे तातः
इति परिभावाय सर्वमसारम्
विश्वं त्यक्त्वा स्वप्न विचारं ।।

कहा। इसका अर्थ है कि तुम कौन हो? मैं कौन हूँ? मैं कहां से आया हूँ? मेरी मां कौन है? मेरे पिता कौन है? शंकराचार्य ने कहा कि इस सारहीन, स्वप्न के समान इस विश्व को इस प्रकार के विचारण से छोड़ देना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस विश्व में जो कुछ भी है, वह भी सारहीन है, अर्थात उसमें कुछ भी नहीं है।

देखिए, कभी-कभी बाजार में मौसंबी खरीदते रहते हैं। उनमें से कुछ मोसंबी फलों का रस बहुत अधिक निकलता है। लेकिन कुछ फल सूखी हुई होती हैं। ऊपर से देखने में अच्छी लगती हैं, लेकिन उन्हें कितना भी दबाएं, उनमें से कोई रस नहीं निकलता। ऐसी मौसंबियों को सारहीन कहा जाता है और फेंक भी देते हैं।

शंकराचार्य जी ने कहा है कि यह सारा विश्व भी सारहीन है अर्थात विश्व में जो कुछ है, वे आपके किसी काम के नहीं है। इस विश्व में ऐश्वर्य, धन, संपत्ति, अनेक प्रकार के सुख, भोग, गाड़ियां, हवाई जहाज, सेल फोन्स आदि जैसे कई हैं। साथ ही उनके साथ पत्नी, पति, माता, पिता, पुत्र, पुत्री, रिश्तेदार जैसे कई लोग हैं। ये सब लोग इन सभी से आकर्षित हो रहे हैं, उन के लिए जी रहे हैं, उनको महान मानते हैं। उन्हें लगता है कि इन्हें प्राप्त कर लेने से जीवन धन्य हो गया, यह उनका सौभाग्य है। वे जीवनभर इन सब को

इकट्ठा करने में लगे रहते हैं और सोचते हैं कि इससे वे दूसरों से महान बन गए जैसे फील होते हैं। लेकिन शंकराचार्य जी ने भज गोविंदम में स्पष्ट रूप से कहा है कि ये सब भी सारहीन हैं, यानी ये सब उपयोगी नहीं है।

शंकराचार्य जी ने कहा कि संपूर्ण विश्व सारहीन है, अर्थात विश्व में जो कुछ भी है, वो सब सारहीन ही है ना?

जो सारहीन है उनको पकड़कर खुशी हो रहे हैं, खुद को महान महसूस कर रहे हैं, गर्व कर रहे हैं, अहंकार कर रहे हैं, उनके लिए गलतियाँ कर रहे हैं, पाप कर रहे हैं, सोचिए, कितना अजीब है।

आप फिर से पूछ सकते हैं कि हम इन सबका अच्छी तरह से आनंद ले रहे हैं, अनुभव कर रहे हैं, सुखी हो रहे हैं। फिर आप इसे सारहीन क्यों कहते हैं? तो यह किसे समझ में आएगा? मतलब जिसको ज्ञान है। ज्ञान अर्थात जिसको यह समझ है कि मैं आत्मा हूँ।

जब तुम यह समझ जाते हो कि तुम आत्मा हो और शरीर नहीं हो, तब यह भी स्पष्ट हो जाता है कि इस ब्र्हमांड में जो कुछ भी है, वे सारहीन और बेकार हैं। क्योंकि? जब तुम अपने आपको शरीर मानते हो, तो ये सब कुछ तुम्हें बहुत आवश्यक लगता है। लेकिन जब तुम अपने आपको आत्मा समझते हो, तो इनमें से कुछ भी तुम्हारे लिए उपयोगी नहीं है। क्योंकि? आत्मा के लिए जो उपयोगी नहीं है, वे सब कुछ सारहीन हैं। इस विषय को शंकराचार्य जी ने कितनी महानता के साथ बताया है!

मुझे पत्री जी ने शुरू में ही कहा था कि तुम शरीर नहीं हो। मुझे समझ नहीं आया। पत्री जी ऐसा क्यों कह रहे हैं? फिर मैंने पूछा, तो मैं कौन हूँ? उन्होंने कहा, तुम आत्मा हो। इससे पहले मैंने कभी आत्मा शब्द नहीं सुना था।

मैंने 53 सालों तक जो नहीं सुना, उन्होंने कहा कि वही मैं हूँ। मैं हैरान रह गया! बाद में, किताबें पढ़ने के बाद, उपनिषदों को पढ़ने के बाद, भगवद्गीता,

पुराणों और इन सबके साथ कई महान लोगों के संदेश सुनने के बाद, तब मुझे समझ में आया कि पत्री जी ने जो कहा, वह सत्य है।

तब तकमैं यह शरीर हूँ इस भाव में दिन-रात मेहनत करके लाखों करोड़ों कमाया। पत्री जी ने कहा कि जिन्हें मैं महान समझ रहा था! जिन्हें देखकर मैं खुशी हो रहा था! वे सब तुम्हारे किसी काम के नहीं बेटे।

ये बात पत्री जी ने 22 साल पहले कही थी। उनके संदेश ने मेरी जिंदगी बदल दी। मैं फिर से

सोचा, अगर मैं आत्मा हूँ तो इतने करोड़ों को मैंने कमाया, इतने संपत्तियों को मैंने इकट्ठा किया, बहुत जमीनें हैं, बहुत इमारतें हैं, बहुत संपत्तियां है, धन है, सोना है, सब कुछ है।

तब मैंने सोचा कि यह सब मुझे अर्थात आत्मा को उपयोगी है क्या? तब मुझे समझ में आया कि कुछ भी उपयोगी नहीं है। संपत्तियाँ ही नहीं, बच्चे हैं, पोते हैं, उनको देखकर खुश हो जाता था, तो यह पत्नी, ये सब रिश्तेदार मुझे अर्थात आत्मा के लिए कुछ उपयोगी है क्या? मैंने इन सबको मेरे लोग समझ कर मैंने उनके लिए अधर्म से कमाया, कई झूठ बोला, रिश्वत देता था, उस तरह मैंने कमाया। लेकिन अब समझ में आया कि ये सब उपयोगी नहीं है।

तब ऐसा लगा कि ऐसे पाप करके जो धन कमाया है उस धन से ये सब सुख से रहकर, भोगों का अनुभव करेंगे। मुझे समझ में आया कि उनके सुख के लिए अगर मैं पाप करूंगा तो मुझे इस पाप का फल भुगतना होगा।

मैं ही नहीं, जिनको मैंने अपना समझा वे सभी आत्मा हैं। वे अपनी योजना के साथ आए, मैं अपनी योजना के साथ आया हूँ, असल में उनका मुझसे कोई संबंध नहीं है, यह समझ में आया।

यही शंकराचार्य जी ने पूछा था। कौन है तुम्हारी पत्नी? कौन है तुम्हारा बेटा? कौन है तुम्हारी बेटी? उन्होंने यह जांच करने के लिए कहा। देखने पर

मुझे यह समझ में आया कि उनका मुझसे कोई संबंध नहीं है।

इस ध्यान मार्ग में आने के बाद मैंने वाल्मीकि की कहानी को जाना है। वाल्मीकि पाप करके, हत्याएं करके, डकैती करके, लूट करके कमाता था। एक बार नारद मुनि ने उससे पूछा कि तुम इतनी पाप क्यों कर रहे हो? वाल्मीकि ने कहा कि मेरे पत्नी को पोसने के लिए ये सब कर रहा हूँ। तब नारद मुनि ने पूछा कि क्या तुम्हारी पत्नी, तुमसे किए गए पापों में से कुछ हिस्सा लेगी क्या? वाल्मीकि ने जाकर पूछा, तो उसकी पत्नी ने कहा कि उसे इन पापों से कोई लेना-देना नहीं है। तब वाल्मीकि नारद मुनि के चरणों में गिर कर पूछता है कि अब मैं क्या करूं? तब नारद मुनि ने उसे पाप छोड़कर, ध्यान करने की सलाह दी। इस प्रकार वाल्मीकि ने पापों को छोड़कर ध्यान करना शुरू किया और महान ऋषि बने। वे रामायण को लिख पाये हैं।

तब मैंने अपने बच्चों से कहा, मैं इस तरह का कारोबार नहीं कर सकता, आप चाहो तो कर सकते हो। उनके जायदाद को बटवारा करके उनको दे दिया, हमारे जायदाद को हमने रखकर, तब से पूरी तरह से इस ज्ञान मार्ग में ही हम जी रहे हैं।

आत्मा होने के नाते, मुझे धन, संपत्ति, इस ब्र्मांड में जो कुछ भी है, और जो कुछ भी आंखों को दिखाई देता है, उनमें से कोई भी मेरे लिए लाभकारी नहीं है। मुझे पता चला कि केवल ज्ञान ही मेरे लिए लाभकारी है। तब से मैं और मैडम दोनों इस ज्ञान की प्राप्ति में लग गए।

एक दो साल बीतने के बाद मुझे एहसास हुआ कि हमारे बुजुर्ग ६० साल के पहले ही शरीर को छोड़ दिया है। मुझे तब तक ५३ वर्ष का हो गया था।

तब तक आत्मा होने के नाते मैंने कुछ भी अर्जित नहीं किया था। कितना जीवन व्यर्थ हो गया, अब क्या करूं, ऐसा मैंने सोचा। मैंने पत्री जी से

पूछा, काश मैं आपसे दस साल पहले मिला होता तो कितना अच्छा होता।

तब पत्री जी ने कहा बस जो हो गया सो हो गया, अब से सावधान रहो। उसे बात से मैंने निर्णय ले लिया कि रात दिन मेहनत करके इस ज्ञान को आर्जित करूं। इसलिए मैं किसी भी दिन को बर्बाद नहीं किया।

भीमवरम में तीन दिन की कक्षाएं शुरू करना ही नहीं बल्कि सभी गांवों में घूम कर इस ज्ञान को बोध करता था। क्यों ज्ञान ही मैं सिखा रहा हूँ, इसका कारण यह है कि आत्मा के लिए मुझे जो लाभकारी है, वह ज्ञान है। पत्री जी ने एक और अवसर पर कहा है कि? जो बाँटा जाता है, वो बढ़ता ही रहता है। ओह... यह सिद्धांत भी है क्या! अर्थात अगर मैं इस ज्ञान को बाँटूँगा तो मैं इस ज्ञान को और बढ़ा सकता हूँ।

इसलिए, तब से मैंने ज्ञान प्राप्ति पर ही ध्यान केंद्रित किया। मैं और मेरे मैडम, दोनों ने ज्ञान प्राप्ति पर ही ध्यान केंद्रित किया।

मैंने यह भी जाना है कि हम जितना ज्ञान बांट रहे हैं हमारा ज्ञान उतना ही बढ़ रहा है।

इसके अलावा, पत्री जी भी ज्ञान बांटते हुए एक महान व्यक्ति बन गए। पत्री जी ने अपनी अंतिम सांस तक ऐसा ही किया, हमारा निर्णय भी यही है। इसलिए हम बिना रुके घूम रहे हैं। ये ज्ञानदान सबसे महान है, इसलिए हमें प्रकृति का सहयोग मिल रहा है। इसीलिए हम इस उम्र में भी घूम रहे हैं। हमारी मैडम भी फायर एक्सीडेंट के बाद भी घूम रही है, यह प्रकृति के सहयोग से ही है।

इसलिए, इस संसार में जो कुछ भी है, वे सब सारहीन है, स्वप्न के समान समझकर आत्मा को लाभ देने वाला ज्ञान को प्राप्त करिए।

बुद्ध ने कहा था कि संसार के बंधनों से मुक्त होना चाहिए। आदि शंकराचार्य ने भी कई उपदेशों में इसी विषय पर भज गोविंदम् में विवरण दिया

है। उन्होंने कहा है कि?

कस्तवं कोहं कुत आयतः
कामे जननी को मे ततः
इति परिभावय सर्वमासारम्
विश्वं त्यक्त्वा स्वप्न विचारं ।।

तात्पर्यः तुम कौन हो? मैं कौन हूँ? मैं कहां से आया हूँ? मेरी मां कौन है? पिता कौन है? इस ब्र्मांड को सारहीन, स्वप्न तुल्य मानते हुए, इस प्रकार विचारण करके छोड़ देना चाहिए। इस ब्र्मांड को सारहीन कहा गया है। शंकराचार्य जी ने इसे स्वप्न तुल्य अर्थात जैसे स्वप्न के समान बताया है।

ऐसे ब्र्मांड में जो कुछ मौजूद है वे स्वप्न तुल्य अर्थात सारहीन है। उसमें कुछ भी नहीं है। हमें यह जानना चाहिए कि इस ब्र्मांड में जो कुछ है सब उसी तरह के हैं ना? देखीये तुम हो, और कई लोग हैं, और बहुत है और बहुत है, कई प्रकार के हैं, कई प्रकार के जीवराशियाँ भी हैं, उसे तरह देखेंगे तो अनंत जैसे दिखाई दे रहे हैं।

आपको इस तरह का प्रश्न खुद से करना चाहिए कि इस तरह के ब्र्मांड में तुम हो? मैं कौन हूँ? तुम कौन हो? पहले इस तरह का प्रश्न करना चाहिए। रमण महर्षि जी के पास जो भी कोई भी इच्छा लेकर जाने से वे कहते हैं पहले तुम कौन हो यह जानो। जो भी समस्या लेकर जाए, कोई भी जाए, वही प्रश्न पूछते थे। कुछ लोग सोचते थे कि कुछ तो बोलेंगे लेकिन जब जाते हैं तो पूछते हैं तुम कौन हो? कुछ लोग तो यह भी सोचते थे कि उसके लिए वहां तक जाने की आवश्यकता क्या है।

ऐसा सोचते हैं, लेकिन यह समझ नहीं पाते कि तुम कौन हो इसी में परिष्कार छिपा है। कड़ताल यज्ञ में पत्री जी की कुछ लोगों ने मंच पर इंटरव्यू किया।

वो सभी अनेक प्रश्न लिखकर आते थे। वे तरह-तरह के प्रश्न पूछते

थे। उन्होंने कहा है कि ध्यान करिए। कोई भी हो कुछ भी प्रश्न पूछने पर ध्यान करने को कहते थे। मेरा बच्चा अच्छी तरह से पढ़ नहीं रहा है, मेरी बात को सुनता नहीं, मुझको बिल्कुल याद ग़ाश नहीं है, मुझको शांति नहीं है, उसे तरह कोई भी समस्या उनसे पूछने पर एक ही समाधान बोलते थे, ध्यान करो, ध्यान करवाइए।

उससे अधिक मूर्ख कोई नहीं है जो यह सोचता है कि इसके लिए उनके पास जाने की आवश्यकता क्या है। सब समस्याओं का समाधान ध्यान ही है, यह विचारण करने पर अंत में यही उत्तर मिलता है कि किसी भी समस्या का समाधान ध्यान ही है।

पत्रीजी ने एक बार कहा था कि मैंने पचास हजार पुस्तकों को पढ़ा है। उनको मिक्सी में डालकर ग्राइंडिंग किया तो उनमें से दो शब्द आए।

वो दो शब्द 'हिंसा छोड़ो! हंसा पकड़ो!' यह दो शब्द ही आए थे। तब उन्होंने कहा कि सभी का परिष्कार इन दो शब्दों में ही है। उनसे बोले गये संदेशों का सार देखेंगे तो अंत में इन दोनों शब्दों को बोलते थे, हिंसा छोड़ो अर्थात मांसाहार को मत खाना। हंसा को पकड़ो अर्थात 'सांस पर ध्यान' रखो।

याद रखिए इधर बहुत से लोगों को इसका अर्थ समझ में नहीं आता। उन्होंने हंसा पकड़ो कहा है लेकिन म्यूजिक पकड़ने को नहीं कहा।

यह कैसी विचित्रता है? उन्होंने कहां कि हंसा पकड़ो अर्थात सांस को पकड़ो, लेकिन सांस को छोड़कर गइडिंग, म्यूजिक को पकड़ रहे हैं।

और उन्होंने कहा है कि तुम हंसा को पकड़ोगे तो हंस बनोगे। रामकृष्ण परमहंस, योगानंद परमहंस जैसे महान बनोगे।

जब मैं क्लासेस को जाता था, जो लोग वहां आते थे, वे मुझसे कई प्रश्नों को पूछते थे, कई समस्याओं को बताते थे। तब मैं उनके परिष्कार के बारे में सोचता था। परिष्कार अंत में इन दो शब्दो के पास आते थे। आप एक बार

जीवन शास्त्र, जीवन शास्त्र २, जीवन की बारीकियां, जीवन के सत्य पुस्तकों को पढ़िए, इन सब पुस्तकों को मैंने जीवन की समस्याओं पर ही लिखा है।

आप एक समस्या को लेते हैं? तब इन चार पॉइंट्स पर अध्ययन करना होगा।

1) समस्या, 2) समस्या से आने वाले नुकसान, 3) वो समस्या क्यों उत्पन्न हुई? उसका कारण क्या है, 4) परिष्कार

जब कोई समस्या उत्पन्न होती है तो उस से बाहर निकालना ही नहीं, बल्कि इन 4 पॉइंट्स के बारे में सोचेंगे तो निश्चित ही सही परिष्कार मिलेगा। समस्या से बाहर निकलेंगे।

मैंने कई आध्यात्मिक संस्थों में रहने वाले गुरूओं, स्वामीजियों को देखा था। इतना ही नहीं वह किसका अनुसरण कर रहे हैं! उसे गुरु का या उसे भगवान का तस्वीर पीछे रखते हैं। वे समस्या से, कठिनाइयों से आने नुकसान के बारे में बताते हैं, लेकिन क्यों आ रहे हैं! इसका कारण नहीं बताते हैं।

उनसे कहे गए परिष्कार इस तरह हैं कि यदि आप उनकी प्रार्थना करेंगे, तो आपके सभी कठिनाइयां दूर हो जाएंगे। इसी तरह, कृष्ण की मूर्ति रखने वाले कहते हैं कि कृष्ण की पूजा करो, तुम्हारी सारी समस्याएँ दूर हो जाएंगे। इसी प्रकार, कोई भी हमेशा किसी को शरण लेने के लिए कहते हैं। गुरु की शरण लो, वे सब कुछ देख लेंगे। लेकिन कोई भी समस्या की कारण के बारे में नहीं बताते हैं।

लेकिन आप कारण को जानने पर ही परिष्कार मिलता है। उस तरह मैंने हर समस्या का कारण जाना है, उन्हीं को मैंने पुस्तकों में दिया है। उन पुस्तकों को पढ़िए।

उन्हें मैं पुस्तकों में भी लिखा है कोई भी कठिनाई कर्म के कारण ही आता है। वे कर्म पिछले जन्मों में किए हो सकते हैं। उन कर्मों को आप

चुनकर आए हैं। इधर सृष्टि के नियम आपको ज्ञान बढ़ने पर समझ में आएगा। सृष्टि का नियम यह है कि चुने हुए कर्म छोटी अवस्था में अनुभव करने की जरूरत नहीं है।

स्वाभाविक रूप में चुने हुए कर्मों को बुढ़ापे में अनुभव करने की व्यवस्था है। इसीलिए युवावस्था में किसी को भी बड़े कठिनाइयां नहीं होती। इसलिए बुढ़ापे में अधिक कठिनाइयां होती है।

शंकराचार्य जी ने कहा है कि तुम कौन हो? मैं कौन हूँ? कहां से आया हूँ? मेरी मां कौन है? पिता कौन है?

आप सोचते होंगे कि शंकराचार्य जी ने ऐसा क्यों कहा। मेरी मां, मेरे पिता मुझको नहीं पता है क्या? पता है लेकिन उनको मेरी मां, पिता समझ रहे हो। विचरण करने पर तुमको समझ में आएगा।

जब तुम यह समझोगे तभी इस परिवार के बंधन से तुम बाहर निकाल पाओगे। नहीं तो इस परिवार के बंधन में ही रहोगे। उस बंधन में रहोगे तो जो काम नहीं करना चाहिए वही करोगे, गलतियां करोगे, पाप करोगे। उसकी वजह से बार-बार जन्म लेंगे। इस तरह तुम्हारे जीवन का अंत दिखाई नहीं देगा।

इसलिए शंकराचार्य जी ने कहा है कि इस ब्र्मांड में जो कुछ भी है सब सारहीन है, स्वप्नतुल्य है बेटा। हमें यह जानना चाहिए कि स्वप्न अर्थात सपना जैसा। जैसे सपना है, यहां जो हो रहा है वो भी सपना ही है। जब तक सपना होता है तब तक वो सभी सत्य प्रतीक जैसे होता है, जब जागते हो तो वो सब माया जैसे लुप्त हो जाता है। तब तुम सोचते हो! अरे ये तो सपना है।

इसलिए हमें जानना चाहिए कि अब यह जीवन जो है वो भी स्वप्न ही है। यदि यह समझ में आएगा तो सभी पर मोह और सभी पर ममत्व को छोड़कर परिवार के बंधनों से बाहर निकलते हैं। बुद्ध ने उनको उत्तम पुरुष कहा था।

पत्री जी ने सपनों के बारे में अच्छी तरह बताया है। असल में सपनों की यह व्यवस्था प्रकृति में क्यों व्यवस्थित किया गया है? आराम से सोने दिया जाए तो बस, लेकिन बीच में फिर ये सपने आते हैं। इन सपनों का क्या फायदा है? याद रखिए, सृष्टिकर्ता जो कुछ भी करते हैं, उसके पीछे एक कारण होता है।

बिना कारण कुछ नहीं होता। तो फिर इन सपनों के कारण क्या है? यह जानने के लिए हमें बुद्ध द्वारा कहे गए शब्दों में और गहरायी से हमें और भी बहुत कुछ जानने को मिलेगा।

शंकराचार्य जी द्वारा कहे गए श्लोक के बारे में जान रहे हैं।

कस्तवं कोहं कुत आयतः
कामे जननी को मे ततः
इति परिभावय सर्वमासारम्
विश्वं त्यक्त्वा स्वप्न विचारं ।।

यह जो बजगोविंदं में श्लोक है, उसका तात्पर्य यह है कि तुम कौन हो? मैं कौन हूँ? मैं कहां से आया हूँ? मेरी मां कौन हैं? मेरे पिता कौन हैं? इस सारहीन, स्वप्न तुल्य ब्र्स्मांड को इस प्रकार विचारण के द्वारा छोड़ देना चाहिए।

इस परिवार के बंधन से क्यों बाहर निकलना है? यानी जांच करने को कह रहे हैं। किस बारे में पूछताछ हा करने है। तुम कौन हो? मैं कौन हूँ? तुम कहां से आए हो? मेरी मां कौन है? मेरे पिता कौन है? इन सभी प्रश्नों के जवाब को जानना होगा।

वे सिर्फ इतना कहते हैं कि वे जानते हैं, लेकिन मतलब नहीं जानते। याद रखिए जानना अलग है, समझना अलग है। जो जानता है वह बताता है। जो समझता है वह आचरण करता है। ऐसे जांच करने वाले सब जानते हैं लेकिन आचरण नहीं कर रहे हैं यानी आपको अभी तक समझ में नहीं आया

है। क्यों जांच करना है? इस परिवार के बंधनों से बाहर निकालने के लिए।

इस परिवार पर ममत्व क्यों नहीं होनी चाहिए? बुद्ध ने कहा है कि हम उत्तम पुरुषों की श्रेणी में प्रवेश करने के लिए। कौन है उत्तम पुरुष? वही जो मोक्ष की स्थिति में है, वही उत्तम पुरुष है। जिस के लिए हम इतनी तपस्या और प्रयास कर रहे हैं, उसे प्राप्त करने के लिए हमें उत्तम पुरुष बनना होगा। उस के लिए एक लक्षण यह है कि परिवार के बंधनों से बाहर निकलना।

इसलिए यह जांच अनिवार्य है। तुम कौन हो? तुम्हारे सामने रहने वाले, तुम्हारे परिवार में रहने वाले कौन है? मैं कौन हूँ? मैं कहां से आया हूँ? मेरी मां कौन है? मेरे पिता कौन है? यह जांच करना है। क्यों? ये सब सारहीन ही है अर्थात सार नहीं है अर्थात बेकार के हैं। यह सब किसको मालूम होता है? जिसको पता होता है कि मैं शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ।

अगर सारहीन को पकड़ोगे तो बहुत नुकसान होगा क्योंकि तुम आत्मा हो, तुम मोक्ष से दूर हो जाओगे। जैसे रसहीन, सारहीन एक मौसंबी

खरीदोगे तो सूखी होती है, उससे रस नहीं निकलता, उसका कोई उपयोग नहीं होता। उसी तरह, सारहीन जैसों को पकड़ने से यह जन्म बर्बाद हो जाएगा। आखिर हमने यह जन्म क्यों लिया है?

इसीलिए शंकराचार्य जी ने कहां है कि वह सारहीन है। उन्होंने यह भी कहा है कि वो स्वप्नतुल्य भी है। स्वप्न अर्थात सपना जैसा है। आप देखिए जब तक सपना हो रहा है तब तक वास्तविक लगता है। लगता है सच में हो रहा है उस तरह महसूस करते हैं। लेकिन जब जागते हैं तब समझ में आता है कि वो सपना था। तब निरुत्साह होते हैं।

एक एक बार जब अच्छे सपने आते हैं तो हम दुःखी भी होते हैं। यह परिवार भी वैसा ही है ना ऐसा शंकराचार्य जी कह रहे हैं। वे कहते हैं, तुम इन सबको सच मानते हो, तुम्हारे रिश्तेदार, तुम्हारा बेटा, तुम्हारी माँ, तुम्हारा पैसा। ये सब स्वप्न जैसे हैं, यानी यह सब भी एक सपना है।

तुम बड़े धनवान बनने का सपना देखते हो, बहुत खुश होते हो, सोचते हो मै कितना भाग्यशाली हूँ। उस सपने में ही तुम उस पैसे से बड़े-बड़े महल बनाते हो, अपनी सारी इच्छाओं पूरा करते हो, और बहुत खुशी से आनंदित होते हो। लेकिन जब तुम जागते हो, तो कहते हो, क्या? मेरे पास कोई पैसा नहीं है? कोई मकान नहीं है? सब कुछ सिर्फ एक भ्रम था! और तुम निरूत्साह होते हो। याद रखिए यह परिवार भी वैसे ही सपना जैसे है।

इसके अलावा उन्होंने कहा है कि यह ब्र्मांड स्वप्न के समान है। यदि ब्र्मांड एक स्वप्न है तो क्या ब्र्मांड में जो कुछ है सपना नहीं है क्या? सोचिए। इसलिए शंकराचार्य जी कहते हैं कि इन बातों को थोड़ा जांच करके छोड़ देना बेटा।

खास कर यदि आप इस परिवार के बंधन से बाहर निकलना चाहते हो तो आपको यह परिवार को एक सपना जैसे समझना चाहिए।

बहुत से लोग बुरा सपना आने पर दुःखी होते हैं। अच्छा सपना आने पर खुशी होते हैं। लेकिन इन स्वप्न आने की व्यवस्था प्रकृति में ही है। इसको सृष्टि में सृष्टिकर्ता से की गई व्यवस्था है। उन्होंने अगर इसकी व्यवस्था नहीं किया हो तो किसी को भी स्वप्न नहीं आएंगे।

इस तरह की व्यवस्था क्यों बनाया? खासकर सपनों के माध्यम से दो तरह के जीवन के पाठ सीखाने के लिए। क्योंकि प्रकृति जो कुछ भी करती है, वो केवल मनुष्यों के उपकार, लाभ और प्रगति के लिए। आप सोचते हैं कि भगवान कुछ नहीं कर रहे हैं। लेकिन यदि आप उनके द्वारा किए गए उपकारों को देखेंगे, तो आश्चर्यचकित हो जाएंगे।

प्रकृति ने यह व्यवस्था दो प्रकार के लाभ प्रदान करने के लिए बनाई है।

1. कच्चा सच, 2. परम सत्य, इन दोनों के पाठ सिखाने के लिए।

आपको समझाने के लिए प्रकृति कह रही है कि जो कुछ भी हो रहा है वह एक सपना ही है, यही कच्चा सच है। अर्थात जैसे आप से देखे गए सपने होते हैं, वैसे ही वर्तमान में हो रही जिंदगी भी वैसी ही है, यह बात प्रकृति हमें समझा रही है। सिर्फ इतना ही नहीं, प्रकृति एक और परम सत्य भी सिखाती है। वह यह है कि 'यद् दृश्यं, तन्नश्यं'। अर्थात जो कुछ भी दिखाई दे रहा है, जो कुछ भी आप देख रहे हैं, वो सब नशवर ही है, उसे ही प्रकृति हमें सिखा रही है।

तुम जो कुछ भी देखते हो,जो होगा, उसे सच, स्थायी और सही मानते हो। लेकिन जो कुछ तुम देख रहे हो, वो सब नशवान है। उपनिषदों में एक महान संदेश है, 'य दृश्यं तन्नश्यं', जो कुछ भी दिखाई देता है, वह नाश होने वाला ही है। यही विषय सिखाया गया है।

प्रकृति सपनों के माध्यम से भी लाभ देती है। मनुष्यों की कई इच्छाएँ पूरी नहीं होती हैं। जब वे पूरी नहीं होती, तो वे निरूत्साह हो जाते हैं, और भगवान की भी निंदा करते हैं। वे इस बात से दुःखी होते हैं कि उनकी इच्छाएँ पूरी नहीं हुई। लेकिन प्रकृति सपनों के माध्यम से उन इच्छाओं को पूरा करती है। जो कुछ हो रहा है, वो सब सपना के जैसा ही है। वे दुःखी होते हैं कि मेरा बेटा ठीक से पढ़ाई नहीं कर रहा, मेरी बेटी की अभी तक शादी नहीं हुई, मेरे व्यापार में नुकसान हुआ है, मैं मकान नहीं बना पाया।

यह याद रखिए कि आपका बेटा ठीक से नहीं पढ़ रहा है, ये विषय को नहीं जानता। यूं ही दुःखी होते हैं। मेरी बेटी की शादी नहीं हुई, कहाँ? सपने में! यदि सपने में शादी नहीं हुई तो आपको क्या फर्क पड़ता है। मैंने मकान नहीं बनाई, बगल वालों ने मकान बना दिया। कहाँ? सपने में। इसलिए जो कुछ भी हो रहा है, वह सब सपने जैसा ही है, यह जानने वाला किसी से दुःखी नहीं होता।

'य दृश्यं तन्नश्यं' ही परम सत्य है। सत्य के समान और कुछ नहीं है।

इसे और कोई बदल नहीं सकता। जो दिख रहा है सब नाशवान है, रहने वाला नहीं है, शाश्वत नहीं है। देखिए! उस एक शब्द में कितना अर्थ है।

इसके अलावा प्रकृति हमें इन सपनों के माध्यम से एक और भी सिखाती है। तुमको जो इच्छाएं पूरी नहीं होती, उन्हें पूरा करता है। वह एक कार खरीदना चाहता है। इस औरत को बहुत चीज़ें खरीदना चाहती है। क्या करेंगे? उसके पास धन नहीं है। खरीद नहीं सकता। इस औरत के पास भी धन नहीं है। ये औरत भी खरीद नहीं सकती। इस औरत को भी हीरों का हार पहनना चाहती है। क्या करेगी? एक अंगूठी खरीदने की भी स्थिति नहीं है। हीरों का हार कैसे खरीद पाएगी। खरीद नहीं पाएगी, इसीलिए भगवान सपनों के द्वारा उनके इच्छाओं को पूरा कर रहा है।

चाहे आप देख सकते हैं जो इच्छाएं पूरी नहीं होती, सपनों के रूप में उन इच्छाओं को पूरा करती है। जब वे इच्छाएँ पूरी हो रही होती हैं, और वह कार खरीदकर उसमें घूमता है, उसी समय अगर सपने के दौरान जागेंगे तो कितने दुःखी होते हैं।

वे सोचते हैं कि कितना अच्छा होता अगर वो सपना वैसे ही होता। इस औरत ने अगर हीरों का हार पहनकर घूम रही थी, और सभी लोग उसे देखकर उसकी तारीफ कर रहे थे, उसकी तरफ ही देख रहे थे, तो वह सपना अगर ऐसा ही चलता रहे, तो कितना अच्छा होगा ऐसा लगता है। लेकिन, अजीब बात है कि नींद में से जाग जाते हो। तब कितनी निराशा होती है! उस समय लगता है, काश वह सपना सच हो जाता, तो कितना अच्छा होता।

कुछ लोगों के सपने कभी-कभी सच हो जाते हैं। तब जब सपना सच हो जाता है और इच्छाएँ पूरी होती हैं, तो वे खुशी-खुशी गाने भी गाते हैं।

एक आदमी सोचता है कि बस एक फिल्मी नायिका का अनुभव करना ही काफी है। जब इच्छा प्रबल होती है तो एक दिन सपना आता है कि इसने

उस फिल्मी नायिका का अनुभव किया है।

उस तरह अधूरी इच्छाएं पूरी करना, पैसे कमाना सपनों में हकीकत जैसे लगता है। यह प्रकृति द्वारा बनाई गई व्यवस्था है। अधिकतर लोग सोचते हैं कि वो सपना था, अब जो हो रहा है वो सच है।

याद रखिए शंकराचार्य जी ने कहा है कि अब जो हो रहा है वो भी सपना है। नींद में आया सपना जैसा है वैसे ही जागृत अवस्था में जो हो रहा है वो भी सपना ही है। यही शंकराचार्य जी ने कहा है। यह पूरा विश्व स्वप्न समान है, सपने जैसा ही है। सृष्टि कितनी महान है ना?

यह सब ज्ञान बढ़ाने पर समझ में आएगा। अज्ञान में रहोगे तो कुछ भी समझ में नहीं आएगा। आप देखिए जो अपराध करते हैं उन्हें जेल में डालते हैं अर्थात बंधी बनाते हैं। लेकिन और एक विषय आपको नहीं मालूम कर्मों को करते हैं उन्हें इस पृथ्वी नामक जेल में बंधी बनाते हैं।

मनुष्य द्वारा व्यवस्थित किया गया जेल जैसा है, वैसे ही यह पृथ्वी रूपी जेल भी! इस पृथ्वी की व्यवस्था भगवान ने किया है, और जेल की व्यवस्था मनुष्य ने किया है। जैसे मनुष्य द्वारा व्यवस्थित जेल में कैद होकर लोग कष्ट झेलते हैं, पीड़ित रहते हैं, वैसे ही भगवान द्वारा बनाए गए इस पृथ्वी रूपी जेल में कैद होकर हर कोई तरह-तरह के दुःखी रहते हैं।

कष्टों, समस्याओं, और परेशानियों से दुःखी रहते हैं। लोग सोचते हैं कि दुःख आ गए हैं, लेकिन यह नहीं सोचते कि जेल में रहने के कारण ही ये दुःख आए हैं। जेल में रहने वाला जेल से कैसे बाहर निकलना चाहता है, लेकिन इस पृथ्वी पर रहने वाला पृथ्वी से बाहर निकलने के लिए नहीं सोचता। लेकिन जो ज्ञानी हैं ऐसा सोचते हैं।

इस पृथ्वी रूपी जेल मुझे क्यों? मुझे अब इस जेल में वापस नहीं आना चाहिए, इस जेल से हमेशा के लिए बाहर निकलना होगा। ज्ञानी सोचता है कि

मैं इस बंधन से मुक्त होना चाहता हूँ। लेकिन अज्ञानी को कुछ भी पता नहीं। वह बस जीता है, कुछ करता है, कर्म करते रहता है, पाप करता है, पुण्य करता है, और बार-बार पृथ्वी पर आता ही रहता है। फिर से दुःखों में रहता है।

यहाँ आने के बाद कई तरह के दुःख होते हैं। जन्म का दुःख, बुढ़ापे का दुःख। इसी तरह कई प्रकार की समस्याएँ, परेशानियाँ होती हैं।

क्योंकि शंकराचार्य जी ने कहा है कि यह परिवार एक सपना के जैसा है। और इसे स्वप्न सदृश्य कहा है। यदि आप इसे समझ लेंगे, तो आपको परिवार के प्रति ममत्व नहीं रहेगा। अन्यथा, बच्चों पर, पत्नी पर, पति पर, धन के प्रति ममत्व नहीं छोड़ेंगे। 'मेरा, मेरा' कहते हुए रोते रहेंगे। इसलिए कहा जाता है कि, 'मेरा' छोड़ने से ही मोक्ष प्राप्त होता है। यह बात आप समझते नहीं हो।

यह 'मेरे' मेरे कह के बहाना बनाकर, कई लोग भीमवरम नहीं आ रहे हैं। पूछने पर कहते हैं, आना तो चाहते थे, लेकिन किसी वजह से नहीं आ सके। कुछ लोग तो पिछले दस सालों से भीमवरम आने की सोच रहे हैं, लेकिन आ नहीं पाए। इसी लिए बुद्ध ने कहा था कि पारिवारिक बंधनों से बाहर निकलने वाला ही उत्तम पुरुष है।

पत्री जी कहते हैं कि 'ना, मा' निकाल दो। अर्थात मेरा, हमारा निकाल दो। असल मेरा है ही नहीं, हमारा भी है ही नहीं, सभी स्वप्न ही है, सब कुछ सपना ही है। इसलिए शंकराचार्य जी ने जांच करने को कहा था। जानिए कि 'मेरा' छोड़ने पर ही मोक्ष। 'मेरा' को पकड़ोगे तो दुःख इस सत्य को जानिए।

यदि तुम्हें यह समझ में आ जाए कि मोक्ष प्राप्त न करने पर जीवन कितना कष्टदायक हो सकता है, तो मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा बढ़ेगी। ऐसी इच्छा रखने वाला ही प्रयास करता है। ऐसे व्यक्ति को महान लोग 'मुमुक्षु' कहते

हैं। वही मुमुक्षु होते हैं जिनमें मोक्ष प्राप्त करने की तीव्र आकांक्षा होती है। अब हम सब भी मुमुक्षु हैं, यानी मोक्ष प्राप्त करने का प्रयास करने वाले हैं।

नहीं तो इतने सालों से इतनी श्रद्धा के साथ ज़ूम में क्यों आते हैं, बताइए? ये बातें क्यों सीखते हैं? जो सीखा है उसे क्यों आचरण कर रहे हैं? यह मोक्ष प्राप्त करने का प्रयास थोड़ा कठिन ही है! इस सांसारिक जीवन में रहते हुए, जहां तरह-तरह के बोझ, जिम्मेदारियां और काम होते हैं, ऐसे लोगों के लिए यह कितना कठिन है, बताइए?

फिर भी, आप सभी कितनी श्रद्धा के साथ भाग ले रहे हैं। इसका कारण है कि मोक्ष प्राप्त करना। वह इच्छा क्यों है? क्योंकि आपने मोक्ष की महानता को समझा है। इन्होंने जाना है कि इस पारिवारिक जीवन में मौजूद दुःखों को समाप्त करना है। कितना कुछ त्याग रहे हैं? और कितना परिश्रम कर रहे हैं?

सुख के लिए भी बिना देखे मोक्ष के लिए ही प्रयास कर रहे हैं। बुद्ध ने कहा है कि जो उस महानता को समझता है, वही उत्तम पुरुष है। फिर बुद्ध द्वारा बताए गए मार्ग में हम सभी आए हैं।

और उन्होंने क्या कहा है कि? पारिवारिक बंधनों से बाहरनिकलने वाले अर्थात हर एक पारिवारिक जीवन जीने वाले हैं। हम वे नहीं हैं जो सब कुछ छोड़कर हिमालयों, जंगलों, आश्रमों में चले गए। इस परिवार में रहने के कारण, परिवार में रहने वाले लोगों के प्रति स्वाभाविक रूप से ममत्व होता है।

किसी को भी, किसी पत्नी को भी, किसी पति को भी, किसी माँ को भी, किसी बच्चों को भी, अपनों से प्यार होता है। वे जो कुछ भी करते हैं, अपने परिवार के लिए ही करते हैं। एक तरह से कहा जाए तो वे अपना जीवन परिवार के लिए त्याग कर देते हैं। जो भी मेहनत करके कमाते हैं, वह भी स्त्री, पुरुष और बच्चों के लिए उस परिवार के लिए उपयोग करते हैं।

इसका कारण है ममत्व। अपने वालों को उतना पसंद करते हैं। उसी पसंद के कारण वे इस पारिवारिक बंधन में फँस जाते हैं। बुद्ध ने कहा है कि? उस तरह फँसने वाले मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते। क्यों कि? इनका जीवन, इनका समय, इनकी ऊर्जा, इनका धन सब कुछ केवल परिवार के लिए ही विनियोग करते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक, यानी पूरा जीवनभर, वे अपने परिवार के लिए ही मेहनत करते हैं। अपने बारे में नहीं सोचते।

मरते समय भी लालसा खत्म नहीं होती। इसके बारे में विद्या प्रकाशानंदगिरी स्वामी जी एक कहानी कहते थे।

एक व्यक्ति बहुत बूढ़ा हो गया था। अपनी अंतिम अवस्था में पहुँच गया था। किसी तरह उसकी जान बची हुई थी। यह समझ आ गया था कि वह अब ज्यादा समय तक जीवित नहीं रहेगा। तब परिवार के सदस्यों ने क्या किया? उसे लाकर घर के बाहर लिटा दिया। वहीं पर पशुओं का झोंपड़ा भी था।

वह थोड़ी देर में 'उस्स-उस्स' कह रहा था। वे सभी बहुत खुश हो गए। क्या पापा को फिर से जान आ रहा है, वह 'स्स-उस्स' कह रहा था, ऐसा उन्होंने सोचा। जब उन्होंने देखा, तो भैंस झोंपड़ी में रखा हुआ पुराना झाड़ू खा रहा था। वो बिगडा हुआ झाड़ू खा रहा था, उसे मारने के लिए उस्स उसस कह रहा था। मत खाओ, मत खाओ! कह रहा था। घरवाले आपस में हंस रहे थे। घर वाले आपस में सोच रहे थे कि वह जाने के लिए तैयार है, लेकिन झाड़ू पर मोह भी नहीं गया।

अभी मानव का जीवन इस तरह है। सभी पर इतना ममत्व बढ़ा रहे हैं। बच्चों पर, पति पर, पत्नी पर, परिवार पर सभी पर इतना ममत्व है। इनको मोक्ष कैसे आएगा। इसलिए बुद्ध ने कहा है कि जो परिवार के बंधनों से बाहर निकलने वाला ही उत्तम पुरुष है।

याद रखिए कि परिवार के बंधनों से बाहर निकलना अर्थात उनसे नहीं

रहना नहीं। उनसे रहना होगा लेकिन ममत्व तो नहीं होना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं कि आप उन्हें ना देखें। उनके लिए गलतियां और पाप नहीं करना चाहिए। अधर्म व्यवहार नहीं करना चाहिए। उसको अपने जीवन को नष्ट नहीं करना चाहिए। खुद के मोक्ष प्रयास में रुकावट नहीं होना चाहिए।

पृथ्वी पर आकर मोक्ष पाना चाहिए लेकिन पतन नहीं होना चाहिए। कौन पतन होगा? जिसको ममत्व होता है। परिवार के बंधनों में फंसने वाला। वे नहीं होंगे तो मैं नहीं रहूँगा। वे ही मेरा सर्वस्व हैं। मेरा नष्ट होने पर कोई बात नहीं, अगर वे अच्छे हैं तो वही मेरे लिए बस की बात है। जो ऐसे विचारों में रहते हैं वे ही परिवारिक बंधनों रहने वाले हैं।

इस प्रकार के पारिवारिक बंधन से जो बाहर निकलते हैं, उन्हें ही उत्तम पुरुष कहा गया है। वही मोक्ष प्राप्त कर सकता है। वही दुःखों से शाश्वत बाहर निकल सकता है। शंकराचार्य जी ने कहा है कि इस पारिवारिक बंधन से बाहर निकलने के लिए जांच करना होगा।

अर्थात तुम कौन हो? मैं कौन हूँ? मैं कहां से आया हूँ? मेरी मां कौन है? पिता कौन है? इन सब की जांच करिए। जानिए। जांच करना यानी जानना है। वो औरत सचमुच मेरी मां है क्या? क्या वह मेरा पिता है? कब जानोगे? पहले तुम कौन हो जनने पर ? तुम कौन हो? तुम आत्मा हो।

सोचिए? तुम्हारी मां ने आत्मा का जन्म दिया है क्या? मां ने बच्चों के शरीर को बनाया है। 'मां के गर्भ में बन रहे शरीर में जब तुम ऊपर के लोक से आकर प्रवेश करते हो, तभी उस शरीर में जान आता है। अर्थात प्राण आया है, यानी हिलना शुरू होता है। यदि मां के शरीर में बन रहे उस शिशु में जो आत्मा तुम हो प्रवेश न करोगे, तो माँ ने उस शिशु को जन्म देने पर भी वो मृत शिशु ही होगा, जान होने वाला शिशु नहीं होगा।

तुरंत कब्रिस्तान में ले जाकर कब्र किया जाता है। मेरा बेटा कहकर मां अपने पास नहीं रख सकेगी ना। क्यों नहीं रख सकती? रखेगी तो सड़ जाएगा।

सड़ने वाला शरीर मां का बेटा कैसे हो सकता है? मां की बेटी कैसे हो सकती है? सोचिए? अगर बेटा हो तो क्यों ले जाकर कब्र करते हैं? रख सकते हैं ना? नहीं रखते। जब तुम्हारी आत्मा उस मां के गर्भ में स्थित शिशु में प्रवेश करोगे, तब शिशु हिलता है।

जब शिशु हिलता है तब मां कहती है कि मार रहा है। तब तक नहीं कहती। लेकिन अगर वह मार रहा है, तो इसका मतलब आत्मा ने प्रवेश किया है ना? यानी तुमने प्रवेश किया। अब बताओ, क्या तुम उस मां से पैदा हुए हो? इस बात का जवाब तुम कहते हो नहीं। वो औरत आपके शरीर की मां है, लेकिन तुम्हारी नहीं। अगर तुम शरीर हो, तो वह तुम्हारी मां है।

तुम शरीर हो क्या? शरीर में प्रवेश करने वाला आत्मा तुम हो। इसलिए वह तुम्हारी मां नहीं है, ऐसा विचार करने को आदिशंकराचार्य जी ने कहा है।

तुम पूर्णात्मा से आए हुए अंश हो। वही पूर्णात्मा तुम्हारे पिता है, माता है, और वही सबकुछ है। उसके बिना तुम कहां हो? यह तुम्हें भी नहीं पता। आत्मा दिखाई नहीं देती। गर्भ में स्थित शिशु में आत्मा कब प्रवेश करती है, यह तुम्हें नहीं पता। अगर प्रवेश करते समय तुम्हें दिखाई देता, तो यह सब समझ में आता। यह दिखाई नहीं देता, इसलिए तुम्हें यह समझ नहीं आ रहा है।

उन्हें लगता है कि मेरा बच्चा बढ़ रहा है। इससे अजीब बात यह है कि जब वह माँ के गर्भ में था, तब शिशु बहुत छोटे आकार का था। जब वह कम महीने का था, तब और भी छोटा था। बाहर आने के बाद, यानी जन्म लेने के बाद, वह दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। एक छोटे से शिशु में आत्मा समाई होती है। यह शरीर चाहे कितना भी बड़ा हो जाए, आत्मा पूरे शरीर में विस्तृत रहती है। आत्मा की महानता यही है, इसे समझें।

माँ के गर्भ में जो शरीर है, उसमें आत्मा किसी लोक से आकर प्रवेश

. हुई है! वह आत्मा तुम्हारा बेटा कैसे हो सकता है? तुम्हारी बेटी कैसे हो सकती है? लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि इसे छोड़ देना चाहिए? ऐसा नहीं है। सृष्टि में कुछ धर्म होते हैं। पत्री जी कहते हैं कि हमारे पास समाज धर्म, गृहस्थ धर्म जैसे होते हैं।

तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हारी आत्मा को कैसे मौका दिया, ताकि तुम बढ़ सको, ज्ञान प्राप्त कर सको, पूर्ण आत्मा बन सको, और इस धरती पर आ सको! उसी तरह, तुम्हें भी कुछ और आत्माओं को मौका देना चाहिए। यही गृहस्थ धर्म है। जैसे तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हें पाला-पोसा, वैसे ही तुम्हें भी अपने बच्चों कोपंख आने तक पाल-पोसना होगा।

जब वे बड़े होते हैं, जब वे मेजर बनते हैं, तो वे अपनी योजना के अनुसार अपने जीवन के अनुभव प्राप्त करेंगे, पाठों को सीखेंगे, और बढ़ेंगे। लेकिन अगर तुम सिर्फ मेरा बेटे, मेरा बेटा कहते हुए, मेरी बेटी, मेरी बेटी कहते हुए, मेरी माँ, मेरे पिता कहते हुए, खुद को भूल जाओगे, तुम्हारे लक्ष्य को भूल जाओगे, तुम्हारी योजना भूल जाओगे, तो ऐसा जीवन जीना बहुत अज्ञानता से भरी हुई विषय होगी।

ऐसे लोग मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते। लक्ष्य को हासिल नहीं कर सकते। ऐसा व्यक्ति उत्तम पुरुष कैसे बन सकता है? इसलिए बुद्ध ने कहा कि परिवार के बंधन से बाहर निकलना चाहिए। बाहर निकलने के लिए शंकराचार्य जी से बताया गया जाँच करके इन सब को समझना चाहिए। तब ही तुम बाहर निकल सकते हो। बाहर निकलने का मतलब है ममत्व को छोड़ दोगे।

शंकराचार्य जी ने क्यों कहा? तुम सब पागल हो सोचते हो कि सब कुछ है, सब कुछ होंगे, ये सब स्थायी है, इन सबको महान समझते हो। उनको ही अधिक महत्व दे रहे हो, लेकिन यह सब सारहीन है, कुछ भी सार नहीं है, सब कुछ स्वप्नतुल्य है अर्थात सपना के जैसे है।

इसलिए इस ब्र्मांड को, इस ब्र्मांड में जो कुछ है उसे जांच के द्वारा छोड़ देना चाहिए। अब हम तीव्र साधना कर रहे हैं। बुद्धि को बढ़ा रहे हैं। विवेक को प्राप्त कर रहे हैं। इस तरह का जांच करने का प्रयास कर रहे हैं। बुद्ध, शंकराचार्य जी, पत्रीजी ऐसे लोगों द्वारा कही गई बोधों का पालन कर रहे हैं। दुःखों से क्यों नहीं बाहर निकलेंगे जरूर बाहर निकलेंगे।

शंकराचार्य जी ने भज गोविंदम में कहा है कि इन पारिवारिक बंधनों से कौन बाहर निकल सकता है।

कस्तवं कोहं कुत आयतः
कामे जननी को मे ततः
इति परिभावय सर्वमासारम
विश्वं त्यक्त्वा स्वप्न विचारं ।।

उन्होंने इसमें कहा है कि तुम कौन हो? मैं कौन हूँ? मैं कहां से आया हूँ? मेरी मां कौन है? मेरे पिता कौन है? वे इन के बारे में जानने को कह रहे हैं। उन्होंने सारहीन, स्वप्न तुल्य ब्र्मांड को इस तरह के जांच द्वारा छोड़ने को कहा है।

और कहा है कि सब कुछ स्वप्न तुल्य है। अर्थात उस स्वप्नावस्था में आने वाले सपनों की तरह है। देखिए जब आप स्वप्न देखते हैं तो वह सपना वास्तविक लगता है, जैसे वास्तव में घटित हो रहा हो।

यदि कोई सपने में हमें मारता है तो हम दुखी होते हैं। उसे सपने में कोई एक्सीडेंट होकर हमें चोट लग जाती है तो हम उस दर्द का भी अनुभव होता है। अगर कोई हम पर गलत तरीके से केस करके, गिरफ्तार करवाके, मैनेज करके, थर्ड डिग्री के जरिए पिटवाते हैं, तो वो भी हम अनुभव करते हैं। मेरी जिंदगी ऐसे क्यों हो गया, ऐसे दुःखी होते रहते हैं।

लेकिन नींद में से जागने पर समझ में आता है कि अरे क्या यह सच नहीं है? सपना है। बहुत आराम महसूस करते हैं। अगर अच्छा सपना देखा तो,

आप अच्छा कारोबार कर रहे हो। करोड़ों का मुनाफा आया, कई लोगों को काम दिखाया, आपकी वजह से कई लोग जी रहे हैं। आप भी उन सब का ख्याल रखते हुए, इतने लोगों कि मैं पालन पोषण कर रहा हूँ ऐसे तृप्ति में रहते हैं। यह सपना से खुशी मिलता है।

भोगों का अनुभव करते समय खुश रहते हैं। लेकिन जब नींद से जागते हैं, तो समझ में आता है, अरे! यह सब सपना था? यह सच नहीं था? तब आपको लगता है, अगर यह सपना थोड़ी देर और रहता, तो कितना अच्छा होता? यह सपना बिखर गया! ऐसा सोचकर थोड़ा दुःखी भी होते हैं। इसलिए, इन सपनों के बारे में थोड़ा जानेंगे।

प्रकृति ने हमको मानव जीवन में मौजूद 'एक कच्चा सच, एक परम सत्य' बोध करने के लिए ही इन सपनों की व्यवस्था हर एक के लिए किया गया है। कच्चा सच, परम सत्य इन दोनों के बारे में हम को सूचित करने के लिए। कच्चा सच क्या है? जो कुछ भी हो रहा है सब सपने जैसा है इसे जानने के लिए ही ये सपने। इसे हमेशा याद रखना चाहिए।

यह प्रकृति से बनाई गई व्यवस्था है। प्रकृति आपको सिखा रही है। कितने जन्मों में सपनों को देखने पर भी मानवों को यह समझ में नहीं आ रहा है, जिसको समझ में आता है वो है ज्ञानी। अगर अभी भी आपको समझ में नहीं आ रहा है तो आप भी आज्ञान में ही हो। याद रखिए जो कुछ हो रहा है सब कुछ सपना ही है।

क्योंकि? मनुष्य 70-80 साल मेहनत करता है, बहुत कुछ कमाता है। बहुत सारे एकत्रित करता है। इतना ही नहीं पत्नी, पति, बच्चे, रिश्तेदार, दोस्त इस तरह कई नजदीकी लोग होते हैं। उनके साथ बहुत अनुबंध होता है। मस्ती से समय बिताना, एन्जॉय करना, अच्छे तरीके से समय बिताना, पार्टियाँ, समारोह, एन्जॉयमेंट, एंटरटेनमेंट, इस तरह के कई अनुभव करते हैं। विभिन्न प्रकार का खाना खाते हैं।

इसके अलावा, तरह-तरह जगहों का संदर्शन करना, पसंदीदा विद्या सीखते हैं और इसी तरह के कई करते रहते हैं। अजीब बात यह है कि इतने सारे अनुभवों, अनुभूतियाँ, इतनी सारी जान-पहचान, इतने कमाने के बाद, ये सब करते हुए, दिन-रात मेहनत करते हुए, जब मर जाता है, तो कुछ भी नहीं रहता, कुछ भी साथ नहीं आता। यह बहुत अजीब है, तब ख्याल आता है, सोचते हैं कि क्या यह सब कुछ सपना जैसा है।

क्योंकि जब मरता है, तब ऊपर से दो सहायक आते हैं और कहते हैं, आ जा भाई तेरा काम पृथ्वी पर खत्म हो गया, चलो अब चलते हैं। उस को समझ नहीं आता, इतने कड़ी मेहनत के बाद, इतना कमाने के बाद, एकत्र करके, इतने लोगों को, परिचितों को बनाकर, मज़े कर रहे हैं! तो ये लोग क्यों कह रहे हैं चलो चलते हैं? उस समय उसको कुछ समझ नहीं आता।

जाना होगा? रुकना होगा? कितना दुविधा है। अर्थात उस समय इतनी दुविधा होती है। जब वे बुलाते हैं, तो लगता है कि ये सब सपने जैसा ही है। जो मेरा था वो नहीं है, मेरे अपने लोग नहीं हैं, मेरे बच्चे नहीं हैं, मेरी पत्नी नहीं है, ये लोग बुला रहे हैं। देखिये जो कुछ हुआ वो एक सपने जैसा लगता है। जो हो रहा था, उसे सच लग रहा था। लेकिन अब, मरने के बाद कुछ भी नहीं है, उस के होश नहीं थे।

उसके जीवन में देखे गए सारे सपने याद आते हैं। सपने देखते समय सब कुछ है ऐसा लगता है। लेकिन जैसे ही जागते हो, कुछ भी नहीं होता। उसी तरह, जब तक जीवित रहते हैं, सब कुछ है जैसा लगता है, सब कुछ घटित हो रहा जैसा लगता है। तकलीफ हो रहा जैसा लगता है, सुख भोगने जैसा लगता है, सब कुछ खरीदने जैसा लगता है, घमंड करने जैसा लगता है, दुःखी होने जैसा लगता है। लेकिन अब कुछ भी नहीं है। वे कह रहे हैं कि सब कुछ छोड़कर चलो।

जागने के साथ ही सपनों में जो कुछ था, उन सब को क्या करा? वे

सब कहाँ चले गये? वे कहते हैं, तुमसे इनका कोई संबंध नहीं है, बेटा। सच मानकर, उन्हें मेरे बच्चे समझकर, मेरी पत्नी समझकर, मेरे पति समझकर, उनके लिए गलतियाँ किये, पाप किए, अधर्म से व्यवहार किया। अब सोचते हैं, अरे, ये सब तो कोई नहीं है।

तब समझ में आता है कि यह सब अनावश्यक से किया। अधर्म से, धोखे देकर कमाया, सोचता है कि क्यों यह झंझट मोल लिया और इस तरह कमाया। जीवित रहते हुए ही यह समझने के लिए प्रकृति ने हमें इन सपनों की व्यवस्था किया है।

भगवान, प्रकृति कितनी चेतावनी देते हैं। हम अज्ञानता में कितनी गलतियां कर रहे हैं, कितने पाप कर रहे हैं। अरे पागल यह सब सच समझ रहे हो... यह सब सच नहीं है बेटा, वो सपना है। इतने से के लिए गुस्सा क्यों? उस पर गुस्सा, दूसरे पर दुश्मनी, और दूसरे पर घृणा। सपने में नफरत क्यों जी? सपने में क्रोध क्यों जी? कोई नहीं होगा। लेकिन याद रखिए कि आपने जो कर्म किए हैं वे होते हैं।

यह जो कुछ तुमने किया, बिना यह जाने कि यह एक सपना है और इसे सच समझकर किए गए वो गलत कर्म, पाप कर्म, वही तुम्हारे साथ आएंगे। फिर सब कुछ अदृश्य हो जाएगा, जैसे सपने की तरह। इसलिए याद रखो, प्रकृति ने सभी के लिए कितनी बड़ी व्यवस्था की है। बहुत कुछ समझना होगा? उन सब को समझना ही ज्ञान है। ज्ञान क्या है? जो कुछ प्रकृति सिखाती है, उसे समझ सकते हैं तो, उससे बड़कर कोई ज्ञान नहीं है।

क्योंकि जब तक सपना रहता है तब तक वो सच लगता है। जागने के बाद कुछ भी नहीं होता तब कहते हैं वह ये सपना है ना। वैसे ही वास्तविक जीवन भी, जो जीवन अभी घटित हो रहा है वो सच लगता है। लेकिन मृत्यु के बाद कुछ भी नहीं होता।

तब सोचते हैं कि क्या ये सब सपना है।

एक तरफ से देखेंगे तो अब जो कुछ हो रहा है वह सब पानी पर लिखने के जैसा होता है। सोचते हैं कि पानी पर लिखने के जैसा है। पानी पर जब लिखते हैं तभी होता है लेकिन अगले क्षण में नहीं होता, पानी ही रहता है। वास्तविक जीवन में भी वैसे ही होता है! सब कुछ है जैसे होता है, लेकिन मरने के बाद कुछ भी नहीं आता, कुछ भी नहीं रहता। इसलिए हर एक को जानना होगा कि जो कुछ हो रहा है वो सपना है सच नहीं है। अब जो कुछ हो रहा है, जो कुछ सच समझ रहे हो, मरने के बाद एक भी नहीं होता, साथ में कुछ भी नहीं आता। सब कुछ सपने की तरह गायब हो जाता है।

इसलिए चाहे कुछ भी हो जाए दुःखी नहीं होना चाहये, खुशी होने की भी कोई जरूरत नहीं। इसीलिए भागवत गीता में भी द्वंदों से बाहर निकलने को कहा गया है। जय-पराजय, नंदा-प्रशंसा, मान- अपमान, सुख-दुःख में प्रतिस्पंदन नहीं करना होगा। क्योंकि जो सपने में होता है उस के लिए ये प्रतिस्पंदन क्यों? पागल नहीं होते तो। कौन जीता? कौन हारा?

तुमको किसने निंदा किया? वह सच है क्या? किसने प्रशंसा किया? शाल को किसी ने ओढ़ दिया तो खुशी से उफ़ान हो जाते हैं, किसी ने आलोचना किया तो उदास हो जाते हैं, यह सब सपने में हो रहे हैं इसलिए जानना होगा कि जो कुछ हो रहा है सपना ही है लेकिन सच नहीं है। यह ज्ञानी को ही समझ में आता है, इसलिए गलतियां नहीं करनी चाहिए, पाप नहीं करने चाहिए, धर्म का पालन करना चाहिए।

देखिए जन्म लेने के बाद हम बहुत कुछ करते हैं, करते-करते चले जाते हैं अर्थात मर जाते हैं, ये सब सपना है। थोड़ा सोचिए आपके बचपन में जो हुआ अब दिखा सकते हैं क्या? है क्या? दिखा नहीं सकते ना। वैसे ही अब जो हो रहा है मरने के बाद कुछ भी नहीं होता। सावधानी से याद रखिए...

यह आपको समझ में आया तो आप में बहुत बदलाव आएगा। सही ढंग से जिएंगे, बहुत ज्ञान प्राप्त करेंगे। क्यों उन सब पर इतना ममत्व, उनके लिए आपका जीवन बर्बाद कर रहे हो, व्यर्थ कर रहे हो।

भीमवरम आने को कहने पर कितने कारण बताते हैं, कितने जिम्मेदारियां बोलते हैं। ये सब सपना है बेटा समझ लीजिए, थोड़ा फुर्सत करके ज्ञान को प्राप्त करोगे तो सब कुछ समझ में आएगा।

ज्ञान नहीं होगा तो समझ में नहीं आएगा। क्यों इतना ममत्व? क्यों चिंता? क्यों आशा? क्या है यह मेरी जिम्मेदारी, जिम्मेदारी रहते हो? तुम आत्मा हो, तुम शरीर नहीं हो। इसलिए इस ज्ञान को प्राप्त करो! इन बंधनों से बाहर निकालो। बुद्ध ने यही कहा है। वही उत्तम पुरुष है।

आदि शंकराचार्य जी ने कहा है कि

कस्तवं कोहं कुत आयतः
कामे जननी को मे तातः
इति परिभावय सर्वमसारम
विश्वं त्यक्त्वा स्वप्न विचारं ।।

तात्पर्य : तुम कौन हो? मैं कौन हूँ? मैं कहां से आया हूँ? मेरी मां कौन है? मेरे पिता कौन है? उन्होंने कहा है कि यह सब कुछ सारहीन है। उसमें कुछ भी नहीं है, वे स्वप्न तुल्य है अर्थात स्वप्न जैसे! सपनों के जैसे! इसलिए ऐसी सब बातों को जाँच करते हुए, खुद से प्रश्न करते रहना चाहिए।

इस तरह खुद से प्रश्न करोगे तो तब तुमको समझ में आएगा कि कुछ भी नहीं है। तब उन पर मतत्व छोड़ देंगे। तब आपको शंका होगा कि ये सब क्यों है। वहां क्यों है? वे सब होते हैं। उनके द्वारा कुछ अनुभवों को प्राप्त करना होगा, कुछ पाठों को सिखना होगा, ये सब उसी के लिए। ये सब पत्नी, पति, बच्चे, परिवार वे सब सच्च नहीं है।

इसलिए वे सब एक सपना जैसे हैं। जब तक सपना होता है तब ये सब कुछ सच लगता है! वैसे ही यह सब भी जब तक हो रहा है तब तक सच लगता है, लेकिन नहीं होते। इसलिए उन पर जो ममत्व है उसे छोड़ देना चाहिए। क्योंकि तुम पैसों पर, इन सब पर ममत्व होता तो गलतियां करोगे, पाप करोगे, जो नहीं करना चाहिए वही काम करोगे।

ममत्व नहीं होगा तो गलतियाँ, पापों को नहीं करोगे। इसलिए शंकराचार्य जी ने कहा ये सब सच में है तो? तुम ममत्व को बढ़ाने पर अर्थ है। जो नहीं होते हैं उन पर ममत्व क्यों? इसलिए इन सबको सपना जैसे समझ कर उनसे बाहर निकलने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि आप देखिए जब तक सपना देखते रहते हैं सच लगता है। लेकिन नींद में से जागने पर कुछ भी नहीं होता, तब कहते हैं कि सब सपना है।

वैसे ही जब तक अज्ञान में रहते हो तब तक जीवन में जो कुछ हो रहा है सच के भाव में रहते हैं। लेकिन आत्मज्ञान प्राप्त करते ही मालूम होता है कि जीवन में सब कुछ सपना है। इसीलिए आत्मज्ञान को प्राप्त करना चाहिए। कारण यह है कि तुम अज्ञान में होंगे तो इन सबको सच मानकर कई गलतियां, पापों को करोगे, स्वाद को महत्व दोगे।

उन जानवरों को मारकर मांसाहार खाते हुए तुम बहुत पाप का बोझ उठाते हो। इसलिए जब तुम ज्ञान प्राप्त करोगे, तब तुम्हें समझ में आएगा कि वे सारे जानवर भी आत्मा के ही स्वरूप हैं। हम भी आत्मा स्वरूप ही हैं। वे भी हमारी तरह अनुभव के लिए ही इस धरती पर आए हुए हैं। तब तुम ऐसा समझोगे और उन्हें कष्ट नहीं दोगे, पाप का बोझ नहीं उठाओगे। जब तुम्हें आत्मज्ञान होगा।

इसलिए जैसे ही नींद से जागते हो, जो सपना में था वो कुछ भी नहीं रहता। तब कहते हो, यह तो सपना था। वैसे ही आत्मज्ञान प्राप्त होते ही जो जिंदगी में हो रहा है सब सपना है, यह समझ में आएगा। उसी प्रकार जब

तीसरी आंख खुलती है, तब भी जो कुछ हो रहा है, वह सब सपना जैसा ही प्रतीत होता है। न केवल आत्मज्ञान, बल्कि तीसरी आंख खुलने पर भी जो हो रहा है, वह सब सपना जैसा लगता है।

इसके अलावा आत्मज्ञानी सारे जीवनभर 'पानी पर खींची गई रेखा' जैसा है, ये सत्य भी समझ में आता है। इसी तरह, जैसे सोए हुए व्यक्ति को आँखें खोलने पर पता चलता है कि वह सपना था। वैसे ही मरने वाले को, यानी जिसने शरीर छोड़ दिया है, मरने के बाद समझ में आता है कि सारा जीवन भी एक सपना था।

इसके अलावा, आत्मज्ञानी 'मृत्यु के बाद भी मरते नहीं है' इस वेदांत को जानेगा। मतलब, 'यदृश्यं तन्नस्यं' इस वेदांत को वह जानेगा। अज्ञानी को यह नहीं पता। 'मरेंगे, मरेंगे' ऐसा सोचता है। पत्री जी कहते हैं कि तुम मरने पर भी नहीं मरोगे। हमें मृत्यु नहीं है, मरने पर भी तुम रहोगे। मरने पर भी तुम्हारे लिए और जीवन है, मरने पर भी तुम्हारे लिए और जन्म हैं, यह जानो!

इतना ही नहीं 'यदृश्यं' तुम को जो कुछ दिखाई देता हो! 'तन्नश्यं' वो सब नाश होने वाले ही है! इस वेदांत को भी आत्मज्ञानी को ही समझ में आता है। सपने में भी आनंद को पा रहे हैं। सोची हुई सारे हो रही हों तो खुशी के अलावा और क्या होगा। वैसे ही जीवन में भी आनंद पा रहे हैं। तुम जो सोच रहे हो वे सब हो रहे हो तो खुशी के अलावा और क्या होगा। सपने में जैसे होगा! तुम्हारे जीवन में भी वैसे ही होगा।

सपने में आनंद पाता रहता है, लेकिन आंख खोलने पर कुछ भी नहीं होता। जैसे सोया हुआ व्यक्ति आँखें खोलने पर समझता है कि यह सपना था, वैसे ही जागा हुआ व्यक्ति इन दो आँखों को बंद करके तीसरी आँख खोलता है तो समझता है कि सब कुछ सपना है।

इस बात को प्रकृति हमें सपनों के माध्यम से सिखाती है और चेतावनी

देती है कि इस सपने जैसी जिंदगी के लिए अनावश्यक गलतियां और पाप मत करो, अपने जीवन को नष्ट मत करो, ज्ञान को प्राप्त करो। कितनी अद्भुत व्यवस्था है ना? लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि जो कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं, भगवान ने मेरी सृष्टि क्यों किया? मुझे इतने कष्ट क्यों दे रहे हैं? अगर मेरी सृष्टि नहीं किया होता, तो कोई समस्या ही नहीं होती। मैंने कभी भगवान से कहा था कि मुझे बनाओ, इस तरह के प्रश्न पूछते हैं।

इस तरह प्रश्न पूछते हैं, लेकिन प्रकृति जो पाठ सिखा रही है, उसे क्यों नहीं समझते? कितने पाठ सिखाती है, कितने लोगों के माध्यम से सिखाती है, यह सब कौन सीख सकता है? एक ज्ञानी ही इन्हें सीख सकता है। इसलिए पहले ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। तब आपको यह सब समझ में आएगा और दुःख नहीं रहेगा।

आपको और एक विषय भी समझ में आएगा वो क्या है कि? यह जीवन ही नहीं, बल्कि यह पूरा संसार एक रंग मंच के जैसे है, यह समझ में आएगा।

इस नाटक में हम सब कलाकार अर्थात भूमिका निभाने वाले हैं। जब तक नाटक होता रहता है तब तक सभी मंच पर होते हैं, उनकी भूमिका निभाते रहते हैं, जब नाटक खत्म हो जाता है तब मंच पर कोई नहीं रहता, सब अपने आप चले जाते हैं, मंच खाली हो जाता है। वैसे ही हम सब भी इस दुनिया नामक नाटक मंच पर अपनी भूमिका निभाने के लिए आने वाले कलाकार हैं।

याद रखिए कि हम भूमिका निभा रहे हैं, हमारी भूमिका कब तक होगी? तुम्हारी भूमिका खत्म होते ही चले जाओगे, फिर नजर नहीं आओगे। देखिए कुछ लोग अतिथि कलाकार होते हैं, कुछ लोग अंत तक रहते हैं, और कुछ लोग बीच में ही चले जाते हैं। वैसे ही इस दुनिया नामक रंग मंच में हमारी भूमिका खत्म होते ही चले जाते हैं, अर्थात मर जाते हैं।

मरने पर लोग बहुत रोते हैं, बहुत दुःखी होते हैं। लेकिन निभाई गई भूमिका खत्म हो गई, अब मेरा वहां कोई काम नहीं है, इसलिए मैं मंच से चले जा रहा हूँ, ऐसा सोचकर नाटक में भूमिका निभाने वाला मंच से चले जाता है। चले जाना मतलब उस भूमिका से चले जाना।

तब वह डायरेक्टर आपको फिर से एक और भूमिका देता है। एक बार मां की भूमिका एक बार सास की भूमिका ऐसे तरह तारक के भूमिकायें निभाना पड़ता है।

वैसे ही एक बार बेटे की भूमिका, एक बार अमीर आदमी की भूमिका, एक बार गरीब आदमी की भूमिका, एक बार कर्मचारी की भूमिका, एक बार अधिकारी की भूमिका, एक बार नौकर की भूमिका, एक बार राजा, एक बार संगीत विद्वान की भूमिका इस तरह कई भूमिकायें निभाते हैं। आप फिल्मों में देखते हो ना? सावित्री कई भूमिकाओं को निभाति है। बहू की भूमिका लेती है, सूर्यकांतं सास की भूमिका लेती है। सास की भूमिका लेने वाली सूर्यकांतं बहू को कष्ट देना ही होगा! भूमिका को अच्छी तरह निभाना चाहिए, नहीं तो उन्हें सेलेक्ट नहीं करते।

वैसे ही सवित्री, जो बहू की भूमिका निभा रही थी, उसे ऐसा अभिनय करना था जैसे दुःखी रही हो, वरना उसे फिल्म में दुबारा काम करने का मौका नहीं मिलता। वैसे ही इस तरह की भूमिकाओं में कुछ लोग दुःख सहने के लिए होते हैं, तो कुछ लोग सुख भोगने के लिए होते हैं।

सबकी जिंदगी एक तरह की नहीं होती, हर किसी की अपनी भूमिका होती है। हम भी तरह-तरह के भूमिका लेकर आए हैं, हम अपनी भूमिका खत्म होते ही चले जाते हैं।

नाटक हो गया तो मंच से उतर जाते हैं। लेकिन असली जिंदगी में इस धरती को छोड़ कर चले जाते हैं। उसी को मरना कहते हैं। मृत्यु मतलब यह

नहीं है कि हम अब वहां नहीं है बल्कि होते हैं फिर से और एक भूमिका लेकर धरती पर वापस आते हैं।

नाटक हो या फिल्म हो तीन घंटे की भूमिका होती है। असली जिंदगी में एक जन्म होता है। उस तरह एक भूमिका एक जन्म में निभाते हैं। इसलिए इस विषय को शेक्सपियर ने भी कहा है। पत्रीजी भी इस विषय को कई बार कह चुके हैं उन्होंने कहा है कि? "All the world is a stage, we are all mere actors, distruct and fume, do our part, and then depart".

यह दुनिया एक रंग मंच है। मानव छोटे-छोटे मंच बनता है! भगवान ने धरती जैसी एक बड़ा मंच बनाया है। इससे हम समझ सकते हैं कि भगवान कितने महान हैं। मानव से बनाए गए मंच में 50 लोग या 100 लोग अभिनय कर सकते हैं या 500 लोग अभिनय कर सकते हैं।

लेकिन भगवान महान है, इसलिए उन्होंने सैकड़ों करोड़ों लोगों की भूमिकाएं निभाने के लिए एक बहुत ही बड़ा मंच तैयार किया है। यही बात शेक्सपियर ने कही थी, 'ऑल द वर्ल्ड ईज़ ए स्टेज।' हम सब सिर्फ कलाकार हैं, अभिनय करने के लिए आए हैं। मतलब, हम अपनी-अपनी भूमिका निभाने के लिए आए हैं।

अभिनय करने के लिए आकर यह सब मेरा है, मेरा है कहते हो। मेरी पत्नी, मेरे पति, मेरे बच्चे, मेरा धन, मेरे, मेरे कहते रहते हो। नाटक में जो कुछ भी है, अगर मैं उन्हें सच में 'अपना', 'अपने लोग' मान लूं, तो कितना मूर्ख हूँ।

उसे राजा की भूमिका मिली, सिंहासन पर ही रहता है, कितना शान दिखता है, कितने आदेश देता है। जब फिल्म खत्म हो जाता है आदेश देने को बोले तो वही नौकर राजा के गाल पर तमाचा मारता है।

उस फिल्म में, उस नाटक में, वह अपनी पत्नी को चूमता है, कोई कुछ

नहीं कहता। वो ऐसा अभिनय करती है जैसे पूरी तरह से तन्मय हो जाती है। अगर वह इसे सच मानकर फिल्म खत्म होने के बाद उसे बुलाकर चूमने की कोशिश करे, तो क्या वो बर्दाश्त करेगी? नहीं, वह उसके गाल पर थप्पड़ मारेगी। नाटक में रहने वाले को यह याद रखना चाहिए कि यह सिर्फ एक नाटक है और संयम से अभिनय करना चाहिए। इसी तरह, इस जीवन को भी एक नाटक, इस दुनिया को एक रंगमंच मानना चाहिए, यह हमेशा याद रखना चाहिए।

हम सब केवल भूमिका निभाने वाले हैं, ऐसा उन्होंने कहा। उस मंच पर थोड़ी हलचल मचाकर अपनी भूमिका निभाकर, फिर वहां से चले जाते हैं। यही शेक्सपियर ने कहा। कितना अद्भुत है! लेकिन इसे सच मानकर कितनी गलतियां करते हैं! कितने पाप करते हैं! कितनी हिंसा करते हैं! और बाद में जब उनका फल भोगना पड़ता है, तो दुःखी हो जाते हैं। नाटक में जो हो रहा है, उसके लिए दुःख क्यों? नाटक में नुकसान हुआ, तो रोना क्यों? निराश क्यों होना? लाभ हुआ तो खुशी से आनंदित क्यों?

आखिर में कुछ भी नहीं रहेगा, सब कुछ गायब हो जाएगा। इसलिए सब से कुछ न कुछ सीखना चाहिए। सीखने के लिए ही इस बड़े जेल में रखा गया है। अरे... जेल में हूँ, यह सोचकर दुःखी होने से क्या होगा? उस जीवन से भी जो सीखना है, वह सीखो! इस तरह, सब कुछ सीखने के लिए ही है।

सलिए शंकराचार्य ने कहा कि जो कुछ भी दिखाई देता है, वह सब स्वप्न तुल्य है। इसीलिए जानो! ये सारे बंधन भी स्वप्न में बंधन ही हैं! इसी लिए बुद्ध ने बोध किया है कि इन भव बंधनों से बाहर निकलो। बुद्ध ने यह भी कहा है कि उन बंधनों से बाहर निकलने वाला ही उत्तम पुरुष है, हमें भी उत्तम पुरुष बनना चाहिए, हमें भी इन भव बंधनों से बाहर निकलना चाहिए, उस ममत्व से बाहर निकलना चाहिए।

ऐसी जांच करनी चाहिए। अगर अज्ञान में हैं और कुछ भी समझ में

नहीं आता है, तो जीवन एक तरह का होता है। लेकिन इन सबको समझने का ज्ञान प्राप्त करके जिएं, तो वह जीवन बिल्कुल अलग तरह का होता है। इसी वजह से मैं बार-बार कहता हूँ, ज्ञान, ज्ञान। इसे सच मानकर मुझे यह बीमारी आ गया, मुझे यह कष्ट आया, मुझे यह पीड़ा हो गई कहते हुए किसी भी प्रकार के संकल्प रखकर, यह करना, वह करना उससे कोई फायदा नहीं होता।

इसलिए ममत्व को छोड़ देना चाहिए, चाहे वो बच्चों पर हो, पत्नी पर हो, पति पर हो, माता, पिता पर हो, इस तरह के कई भूमिकाएं हैं, धन पर ममत्व को छोड़ देना चाहिए।

इस भाग में हम सपनों के बारे में कह कर रहे हैं। असल में इन सपनों को कैसे देखते हैं? सपने क्यों आते हैं? असल में ये कैसे आते हैं अब इसके बारे में थोड़ा जानेंगे।

सपने देखना मन की सहज स्थिति है। हमको समझ में आता है कि सपने आना मन का काम है। यह जागृत, गहरी नींद के बीच की अवस्था है। इंद्रियां अपनी ग्रहण शक्ति का उपयोग करने में रुकावट आने पर, यानी जब इन्द्रियां अपने कार्य नहीं कर पाते जैसे आँखें नहीं देखती, कान नहीं सुनते, मुँह नहीं बोलता, हाथ काम नहीं करते, पैर काम नहीं करते। सोने के समय यही होता है।

मन अपने गहराई में सोई हुई यादों को पुनःस्मरण करता है। ऐसे मन को हम सबकॉन्शियस मैंड़ कहते हैं। हर किसी के भीतर अधूरी इच्छाएं मन की गहराइयों में छुपी रहती है। ये इच्छाएं ऐसा करती है कि मन अवसर मिलने पर इच्छाऐं पूरी होने का मन इंतजार करती रहती है।

जब ज्ञानेन्द्रियां बाहरी दुनिया में हो रही है उन को ग्रहण करने की स्थिति में नहीं होती, तब स्मारक मन विश्राम करता रहता है। स्मारक मन और अपस्मारक मन दो प्रकार के होते हैं। इन्हें कॉन्शियस मैंड़ और सबकॉन्शियस मैंड़ कहा जाता है। सबकॉन्शियस का मतलब है अपस्मारक स्थिति, जिसमें नींद

के समय स्मारक मन भी विश्राम करता रहता है।

तब अपस्मारक मन में छिपी हुई इच्छाएं पुनःस्मरण होकर वापस आती रहती हैं। अंदर छिपी हुई बाहर आती रहती हैं। इन्हीं को सपने कहा जाता है। हम इनके बारे में सरलता से बताया करते थे। इन को तीन अवस्थाओं में कहा जा सकता है।

1) जागृतावस्था

2) स्वप्नावस्था

3) शुषुप्ती अवस्था

जागृतावस्था में शरीर, इंद्रियां काम करती हैं, ऐसा हम कह चुके। जब रात में सोते हैं, तब ये इंद्रियां, शरीर काम नहीं करते। केवल मन काम करता है। वह मन क्या करता है? वह अपस्मारक मन क्या करता है कि जागृतावस्था में जो घटनाएं हुई थी, यानी इच्छाओं को कल्पनाओं के जैसे बनाता रहता है।

इसलिए सपने थोड़ा गड़बड़ होते हैं। कभी यह, कभी वह बाहर आते रहते हैं। कभी-कभी ये सपने बिल्कुल स्पष्ट रूपी होते हैं, और कभी-कभी नहीं होते। जैसा हमने पहले बताया इन्हें सपने कहते हैं। क्योंकि ये स्वप्न अवस्था में आते हैं, इसलिए इन्हें स्वप्न भी कहा जाता है। इन सपनों के कई प्रकार होते हैं। हम सामान्य तौर पर जो अच्छे और बुरे के अलावा दो और प्रकार के सपने होते हैं।

1) भविष्य में होने वाली घटनाओं को सूचित करने वाले होते हैं। इसी कारण कुछ लोग कहते हैं कि मुझे पहले से ही पता चल जाता है कि क्या होने वाला है। इसके अलावा, भविष्य में होने वाली घटनाओं को बताने वाले सपने हमारे लिए मार्गदर्शक भी बन सकते हैं।

2) विशेष रूप से डर उत्पन्न करने वाले होते हैं। इसके अलावा, ये डरावने सपने कैसे आते हैं, तो यह उम्मीदें टूटने के कारण होती हैं, अत्यधिक

चिंता करने से, यानी वे अत्यधिक सोचते रहते हैं। दुःख देने वाली बातों के बारे में अत्यधिक सोचते रहते हैं। इन कारणों से डरावने सपने आते रहते हैं।

इसी तरह, यदि मानव बहुत थका हुआ हो, उसे अधिक अपच हो, तो डरावने सपने आ सकते हैं या नहीं भी आ सकते। जो भी हो, सपने तो सपने ही होते हैं, यानी झूठे ही होते हैं। उन्हें अधिक महत्व देने की आवश्यकता नहीं है। अधिकतर लोगों को सपने याद नहीं रहते। और यदि किसी को याद भी रहें, तो वे मन की कल्पनाएं ही हैं, इसलिए उन्हें महत्व देने की जरूरत नहीं है। हम ने पहले कुछ बातें की हैं कि क्यों ये सपने आते रहते हैं।

अभी हमने कहा कि सोकर उठने पर पता चलता है कि वह एक सपना था। इसी तरह, जब जीवित व्यक्ति मर जाता है, तो समझ में आता है कि वह जीवन भी एक सपना ही था। यह सब बातें हमने चर्चा की हैं। इसके अलावा, नींद के अवस्था में विभिन्न प्रकार के शरीरों के साथ देखे जाने वाले सपने भी अलग तरह के होते हैं। उनके बारे में हम फिर कभी और जानेंगे।

इसके बारे में पत्री जी कहते हैं। यदि आप विशेष रूप से ध्यान करते हैं, तो आपके शरीर से सूक्ष्म शरीर बाहर आता है। उस शरीर के साथ गीज़ा पिरामिड के अंदर जाकर वहाँ बैठने को कहते हैं। तब वहाँ से कारण शरीर बाहर आता है। उस कारण शरीर के साथ कारण लोकों में मौजूद पिरामिडों में जाकर बैठने को कहते हैं। तब वहाँ से महा कारण शरीर बाहर आता है, ऐसा बताया है।

कारण लोकों में पिरामिड के अंदर बैठकर ध्यान करना चाहिए। केवल बैठने का मतलब यूँ ही बैठना नहीं है। पिरामिड के अंदर जाकर वहाँ ध्यान करना चाहिए। तभी उसके अंदर मौजूद शरीर बाहर आता है। पत्री जी कहते हैं कि हमारे पास कुल सात शरीर होते हैं। तब हम महा कारण लोकों में जाते हैं। वहीं जब तुम तीव्र साधना करोगे तो, तब विभिन्न प्रकार के शरीरों के साथ देखे जाने वाले सपनों के बारे में बाद में जानेंगे।

4) तृष्णारहितः

तृष्णारहित का मतलब है, जिसे इच्छाऐं नहीं होती उसीको बुद्ध ने उत्तम पुरूष कहा है। वास्तव में, अधिकांश लोग अपनी इच्छाओं के लिए ही जीवन जी रहे हैं। बिना इच्छाओं के कोई नहीं रह सकता।

आवश्यकताओं के लिए होने वाली इच्छाएं अलग होती हैं, शान-शौकत के लिए होने वाली इच्छाएं अलग होती हैं। आवश्यकताएँ अनिवार्य होती हैं। पृथ्वी पर शरीर खड़ा रखने के लिए आवश्यकताएँ जरूरी होती हैं। लेकिन शान-शौकत के लिए होने वाली इच्छाएँ मनुष्य को नुकसान पहुँचाती हैं। कौन उत्तम पुरूष हैं? जो लोग निर्वाण की प्राप्ति के लिए प्रयास करते हैं, वेही उत्तम पुरूष हैं। यह प्रयास कौन करते हैं यानी जिनको इच्छाएँ नहीं होती।

इच्छाएँ होती हैं तो उन इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश करता है। वे इस संसार में जो कुछ भी है, इस दुनिया में जो कुछ भी है, उसे अनुभव करना चाहते हैं, शौकों का आनंद लेना चाहते हैं, पांच इंद्रियों से भोगों का अनुभव करने की इच्छाएँ होती हैं तो वे निर्वाण प्राप्त करने के लिए क्यों कोशिश करेंगे? मोक्ष प्राप्ति के बारे में क्यों सोचेंगे? जन्म न होने की स्थिति क्यों चाहेंगे? जन्म होने पर ही इन सब का अनुभव कर पायेंगे, इन शौकों का आनंद लेंगे, इन इच्छाओं को पूरी करेंगे। इसलिए, जिनको इच्छाएँ होती हैं, उन्हें मोक्ष नहीं मिल सकता। मोक्ष को चाहने वालों को इच्छाएँ नहीं होनी चाहिए।

अब हमारे समिति में भी कई लोग इच्छाओं के लिए ही ध्यान कर रहे हैं। बीमारियां कम होने की इच्छा, शौकों पूरा करने की इच्छा, धन कमाने की इच्छा, समस्याएं दूर होने की इच्छा और कई इच्छाएं। बेटी की शादी होने की इच्छा, बेटे को नौकरी आने की इच्छा, पति के लिए इच्छाएं, पत्नी के लिए इच्छाएं। पत्नी मेरी बात मानने की इच्छा, पति अनुकूल रहने की इच्छा, इस तरह की विभिन्न इच्छाओं के लिए ही ध्यान कर रहे हैं।

उनसे किसी ने कहा कि तुम ध्यान करो, तुम्हारी सभी इच्छाएं पूरी हो

जाएंगी। और कुछ लोग कहते हैं, तुम संकल्प लेकर ध्यान करो, तो जल्दी पूरी हो जाएंगी। इसलिए ऐसे संकल्प लेकर ध्यान करने वाले भी बहुत लोग हैं। लेकिन बुद्ध ने स्पष्ट रूप से कहा है, कौन उत्तम पुरुष है? जो मोक्ष प्राप्त करने के योग्य है यानी तृष्णारहित यानी जिसे कोई इच्छाएं नहीं होती।

यहाँ पर सब कहते हैं तो फिर कैसे संभव है। लेकिन पत्री जी कहते हैं कि तुम्हें जो करना है वो करो, जो पाना है वो अपने-आप प्राप्त करोगे। उन्होंने कई बार यह कहा है कि तुम्हें इच्छा करने की आवश्यकता नहीं है।

उन्होंने कहा है कि प्रारंभिक जन्मों में चाहने से कुछ नहीं मिलता, केवल योग्यता के आधार पर ही प्राप्त होता है। मध्यस्थ जन्मों में चाहने से कुछ नहीं मिलता, जो चाहिए वही मिलेगा। अंतिम जन्मों में भी चाहने से कुछ नहीं मिलता, बल्कि तुम्हारे द्वारा संसार को जिसकी आवश्यकता होती है, वही तुम्हें प्राप्त होता है। यानी वास्तव में देखा जाए तो इच्छाएँ कभी पूरी नहीं होती। लेकिन मानव फिर भी चाहते ही रहते हैं।

दुनिया में कुछ लोग पूजा करते हैं, कुछ लोग प्रार्थनाएँ करते हैं, कुछ लोग नमाज करते हैं, इस तरह सभी लोग अपनी इच्छाओं के लिए ही ये आराधनाएँ कर रहे हैं। लेकिन मानव की असली इच्छा मोक्ष प्राप्ति ही है, जन्म राहित्य प्राप्त करना, यानी मृत्यु और जन्म न होने की स्थिति प्राप्त करना। अंतिम जन्म में पहुंचे लोगों को ये कांक्षा होती हैं, उनमें वो तड़प होती है। ऐसे लोग तृष्णारहित होना चाहिए। उन्हें इच्छाएँ नहीं होनी चाहिए। यही बुद्ध ने कहा है।

आप देखिए भागवत गीता में श्री कृष्ण ने जो कहा था, बुद्ध ने भी वही कहा है।

श्लोः यस्य सर्वे समारम्भाः कामसङ्कल्पवर्जिताः।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः (भ.गी.4 -19)

तात्पर्य : जिसके सभी कर्म, इच्छाएँ और संकल्प नहीं होते, और

जिनके कर्म ज्ञान के अग्नि से जलकर दग्ध हो जाते हैं, ऐसे व्यक्ति को ज्ञानी पंडित कहते हैं। देखिए, बुद्ध ने उत्तम पुरुष कहा। कृष्ण ने पंडित कहा।

पुरुषों में सर्वोत्तम होने वाले को बुद्ध ने उत्तम पुरुष कहा। मानवों में उच्चतम होने वाले को श्री कृष्ण ने पंडित कहा। एक तरह से कहना हो तो, वे जो ज्ञान में पूर्णता प्राप्त करने वाले, वे जो पराकाष्ठ स्थिति तक पहुंचने वाले। इसका मतलब है, जिन के सभी कर्म, इच्छाएँ और संकल्प नहीं होते, यानी वे कर्म करते समय किसी भी प्रकार कोई इच्छा के बिना अर्थात मुझे यह परिणाम चाहिए, मुझे यह लाभ चाहिए ऐसी कोई इच्छा न हो। इसी तरह, कुछ लोग ध्यान का कर्म करते हैं, संकल्प करते हैं। फिर कुछ लोग उन संकल्पों के लिए ही ध्यान करते हैं।

लेकिन श्री कृष्ण ने क्या कहा है कि जो भी कर्म तुम करते हो, उसे इच्छा और संकल्प के बिना करना चाहिए। तुम्हें जो करना चाहिए वही करो, जो तुम्हें प्राप्त है वही मिलेगा। बिना कुछ किए कुछ भी नहीं मिलेगा। कुछ भी करने पर ही कुछ भी मिलेगा। इस प्रकृति में कोई भी कर्म करने पर उसे उसके कर्मों के अनुसार परिणाम मिलेगा। अच्छे कर्म करोगे, तो अच्छे परिणाम मिलेंगे, बुरे कर्म करने से बुरे परिणाम मिलेंगे।

इसलिए, चाहने पर दृष्टि नहीं रखिय, करने पर ही दृष्टि रखिए। इस प्रकार, यदि तुम इच्छाएँ करो या संकल्प करो, तो तुम पंडित नहीं बन सकते, तुम महान नहीं बन सकते। तुम केवल सामान्य व्यक्ति के समान हो।

इसके अलावा, इस श्लोक में और कहा गया है कि ज्ञान को अग्नि की तरह प्रज्वलित करके कर्मों को भी दग्ध कर देना चाहिए। ऐसे व्यक्ति को ही पंडित कहते हैं।

इसके अलावा, श्री कृष्ण ने कुछ अवसरों पर इच्छा नहीं करनी चाहिए यह कहकर भी बताया है। १२वें अध्याय के १७वें श्लोक में।

श्लोः यो न ह्यष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति ।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः (भ.गी 12 -17)

तात्पर्य : जो हर्ष नहीं होता, द्वेष नहीं, जिसको शोक नहीं, जिसको कामना नहीं, जो शुभ-अशुभ दोनों को छोड़ चुका हो, यानी पाप और पुण्य दोनों को छोड़ चुका है, ऐसा भक्त मुझे पसंद है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भगवान को पसंद होने के लिए किसी भी प्रकार की इच्छाएं नहीं रखनी चाहिए।

बुद्ध ने जो बातें कही हैं, यदि हम उन्हें अपने जीवन में अपना सकें, तो किसी का भी जीवन महान बन सकता है। जो उनके बोधों का पालन करता है, वह उत्तम पुरुष के जैसे विकसित होता है।

उन्होंने उत्तम पुरुष के गुणों के बारे में बताते हुए कहा कि वह तृष्णारहित होना चाहिए। अर्थात उसे इच्छाएं नहीं होना चाहिए, इच्छाओं का गुलाम नहीं बनना चाहिए। वही तृष्णारहित कहलाता है। आवश्यकताओं को छोड़ने की जरूरत नहीं है। शारीरिक आवश्यकताएँ हर एक के लिए होती हैं। पारिवारिक आवश्यकताएँ भी होती हैं। इन सभी को पूरा करते हुए निर्वाण प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए, अर्थात दुःखों से हमेशा के लिए बाहर निकलना चाहिए।

वास्तव में यह आकांक्षा, यह तपन 300 या 350 जन्मों के बाद ही आती है। योगी वेही होते हैं जो उस स्थिति तक पहुँच चुके होते हैं। यदि हम उनके मार्ग पर चलें, तो हम भी उन्हीं के तरह महान बन सकते हैं। श्रीकृष्ण ने भी भगवद्गीता के द्वारा सभी को यही बोध किया है। उन्होंने कहा है कि तुम्हें कर्म करने का अधिकार है, लेकिन उसके परिणाम चाहने का अधिकार नहीं है।

आज श्री कृष्ण द्वारा कही गई कुछ और बातें जानने की कोशिश करेंगे। मैं सिर्फ एक बात कह रहा हूँ, ऐसे महान व्यक्तियों द्वारा कही गई बातों को अनदेखा नहीं करना चाहिए। उन्हें उपेक्षित नहीं करना चाहिए। अगर हम लापरवाही करेंगे, तो नुकसान हमारा ही होगा। इन इच्छाओं के बारे में उन्होंने

और क्या कहा है कि

श्लोः अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः ।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः ।। (भ.गी.12-16)

तात्पर्य : जिस को इच्छाएँ नहीं हैं, जो अंतरशुद्धि वाला है, विवेकवान है, किसी में आसक्ति नहीं रखता, दुःखी नहीं होता, जिसने सभी कार्यों का परित्याग किया है जो मुझमें अर्थात आत्मा में भक्ति होने वाला, मुझे पसंद है।

श्रीकृष्ण ने अपने पसंद होने वालों के कुछ गुणों को बताते हुए कहा कि उन को इच्छाएँ नहीं होने वाला। इसी तरह, बुद्ध ने भी उत्तम पुरुष के गुणों को बताते हुए कहा कि वह तृष्णारहित होना चाहिए।

और उन्होंने क्या कहा है कि अंतःशुद्धि वाला यानी अंतर में रेहने वाला मन है। जिनका मन शुद्ध होता है, उनका अंतर भी शुद्ध ही होता है। यही प्रयास हम सभी कर रहे हैं। इसलिए हम हर दिन इतनी तीव्र ध्यान साधना कर रहे हैं। यदि अंतर शुद्ध नहीं होता, तो बाहरी व्यवहार सृष्टि के विपरीत होता है, बुद्धि ठीक से काम नहीं करती। यदि अंतरशुद्धि नहीं होती, तो इच्छाएँ भी बढ़ जाती हैं।

इसलिए श्रीकृष्ण ने अंतरशुद्धि की बात कहा था। और उन्होंने और क्या कहा है कि विवेकवान, जिसको विवेक है मतलब है कि विशेष रूप से जल्दबाजी में निर्णय नहीं लेना चाहिए। थोड़ा सा विवेक का उपयोग कर के निर्णय लेने चाहिए। मैं इस स्तर तक पहुँचने का कारण पत्री जी से परिचित होने के बाद उन्होंने मुझे बहुत सी बातें बताई।

वे सारी बातें ऊपर से देखने पर लोक विरुद्ध लगते हैं, लेकिन वे सब अक्षर सत्य हैं। उन्होंने कहा कि मूर्ति भगवान नहीं है, आत्मा ही भगवान है। मैं कुछ भी घबराया नहीं। मैंने सोचा कि अगर उन्होंने यह बात कही है, तो इसके पीछे जरूर कोई कारण होगा। हो सकता है कि मुझे इसके बारे में मालूम

नहीं, लेकिन मैंने थोड़ा विवेक का उपयोग करके इसे समझने की कोशिश की। मैंने इसके लिए कुछ ग्रंथ भी पढ़े।

उपनिषदों में इसे स्पष्ट रूप से कहा गया है। वास्तव में वेदों में मूर्ति की बात ही नहीं की गई है। जो कुछ भी देखा, जो कुछ भी पढ़ा, अंत में भगवद्गीता में भी आत्मा को ही भगवान बताया गया है, यह बात स्पष्ट रूप से दिखाई दी। तब मैंने आत्मा को ही पकड़ा। और सच में, मेरे जीवन में बहुत बदलाव आए। मैंने अपने जीवन को बदल लिया, अब मैं हजारों लोगों को सही मार्ग को दिखा पाया हूँ।

मैं आनंद से जीवन जी रहा हूँ। मैंने सबको आनंद से जीवन जीने का प्रयास किया। यह सब विवेक के कारण ही संभव हुआ। श्रीकृष्ण ने भी कहा था कि विवेकवान बनो। पत्री जी ने एक और बात कही। जो बातें उन्होंने कही, वे अविश्वसनीय सत्य थे। उन्होंने कहा, तुम शरीर नहीं हो, तुम आत्मा हो। यह सुनकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। मैं शरीर नहीं हूँ, तो फिर क्या हूँ? मैं आत्मा कैसे हूँ? वह कहाँ है? लेकिन मैं घबराया नहीं।

उन्होंने कहा है, तो इसके पीछे जरूर कोई कारण होगा, यह सोचकर मैंने थोड़ा विवेक का उपयोग किया और जाँच किया, तो पता चला कि जो उन्होंने कहा, वो सत्य है। जब तक मैं खुद को शरीर मानता रहा, तब तक अशांति, दुःख के साथ जीता रहा। लेकिन जब मैंने यह जाना कि मैं आत्मा हूँ, तो आधा दुःख उसी समय समाप्त हो गया। मेरे जीवन में बहुत बदलाव आया।

सब अलग-अलग है, ऐसा भाव चला गया यह पता चला कि सब एक है। अलग मानने पर ईर्ष्या, द्वेष, असूया, घमंड, अहंकार जैसी भावनाएँ होती हैं। हमें लगता है कि हम ही सबसे महान हैं। लेकिन जब यह समझ आया कि सब एक है, तो फिर तुम्हें घमंड करने की क्या जरूरत है? तुमको अहंकार कैसे हो सकता है? इसके बाद जीवन में कई बदलाव आए।

जैसा कि श्रीकृष्ण ने कहा था, मैंने वही विवेक उपयोग किया। और

श्रीकृष्ण ने कहा है कि जो किसी पर भी आसक्ति नहीं रखता, यह आसक्ति कब नहीं होगी, यानी जो पत्री जी से कहा हुआ मैं आत्मा हूँ इस को समझने पर आसक्ति नहीं होता। इसका कारण यह है कि आत्मा ही परमब्र्ह्म है। यह भी हमने जाना था।

अर्थात मैं ही वह ब्र्ह्म हूँ ना! अहं ब्र्ह्मास्मि है ना! जब ब्र्ह्म ही मैं हूँ, और सारी सृष्टि उन्हीं की है, जब मैं ही ब्र्ह्म हूँ, तो फिर सब कुछ मेरा ही है। तब किस पर आसक्ति होगी? कुछ भी मेरे पास नहीं हो, तो उस पर आसक्ति होगी। जब सब कुछ मेरा हो, तो फिर किस पर आसक्ति क्यों होगी? यह सब हमारा ज्ञान बढ़ने पर आने वाले परिवर्तन हैं।

जैसा कि श्रीकृष्ण ने कहा, वह स्थिति हमें प्राप्त होती है, जब हम उनके पसंद बन जाते हैं। फिर उन्होंने कहा कि वह व्यक्ति दुःखी नहीं होता। जब यह ज्ञान प्राप्त हो जाता है, जब आप यह सब जानोगे, तो फिर आपको दुःख क्यों होगा? श्रीकृष्ण ने और कहा है कि, वह समस्त कार्यों को परित्याग करता है। उसे इस सांसारिक कामों में कोई आसक्ति नहीं होती, उसकी आसक्ति केवल आत्मा पर होती है। वही बातें करता रहता है। वही कार्य वह करता है, जो आत्मा को लाभकारी हो। वह आत्मा के जैसे ही जीता है।

ऐसे लोग भगवान को पसंद होते हैं, वे मोक्ष को प्राप्त कर चुके। यही श्रीकृष्ण का संदेश है। इसलिए, ऐसे महान लोग जो कुछ भी कहते हैं, सभी वही कहते हैं। वही हम जान रहे हैं। आचरण में रख रहे हैं। धीरे-धीरे बुद्ध ने जो उत्तम पुरुष के लक्षण बताए हैं, उन्हें अपनाकर हम भी उत्तम पुरुष बन जाएंगे।

To subscribe to Tatavarthy's YouTube channel:

When you click the YouTube link sent in the WhatsApp group, it will open the Tatavarthy Veera Raghava Rao channel. Once open, you will see the "Subscribe" button-click on it to subscribe. By clicking the bell icon next to it, you can receive notifications of new videos everyday.

Otherwise, visit www.tst.org.in/videos/ Click on "Tatavarthy Veera Raghava Rao" in Section I, or on the names in sections II & III. This will open the respective channels. Once open, click the "Subscribe" button, and by pressing the bell icon next to it, you can get daily video updates.

ब्रह्मविध्वरिष्ठ तटवर्ति राज्यलक्ष्मी का हिन्दी किताब

1) एक और जन्म । Rs.160/-
2) ज्ञान माला Rs.70/-
3) श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरुओं। Rs.70/-
4) अगर मानव को योगी बनना है तो ? Rs.60/-
5) महात्माओं के संदेशों। Rs.50/-
6) मानव के कर्तव्यों। Rs.50/-

For Books Please Contact :

TATAVARTHI VEERA RAGHAVARAO

BHIMAVARAM. Ph: 94403 09812

श्री तटवर्ती वीरा राघवराव का हिन्दी किताब

1) आत्म शास्त्र । Rs.200/-
2) ध्यान विद्या । Rs.160/-
3) भगवद् गीता का सार । Rs.160/-
4) सत्य मार्ग । Rs.160/-
5) मरने से पहले मरना है। Rs.130/-
6) ‘गाइडिंग’ ध्यान क्यों नही ? Rs.120/-
7) भगवान कौन हैं। Rs.120/-
8) कर्म सिद्धांत । Rs.120/-
9) विज्ञान का अर्थ - निहितार्थ Rs.120/-
10) ब्रह्म ज्ञान। Rs.100/-
11) यह जीवन क्यों हैं ? Rs.100/-
12) मेहर बाबा का संदेश। Rs.100/-
13) मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।.. Rs.80/-
14) भागवत के दृश्यों का अर्थ..................... Rs.80/-
15) आत्मा हंतक कौन होता है?................... Rs.70/-
16) दुख निवारण का मार्ग Rs.75/-
17) उत्तम पुरुष Rs.60/-
18) आर्थिक स्थिति बढ़ाना है तो ? Rs.60/-
19) निर्वाण मार्ग Rs.60/-
20) सत्य Rs.50/-
21) क्या हम इस लोक के वासी हैं या परलोक के वासी हैं? Rs.50/-
22) गुरु को पहचानना कैसे ? Rs.50/-

For Books Please Contact :

TATAVARTHI VEERA RAGHAVARAO

BHIMAVARAM. Ph: 94403 09812

उत्तम पुरुष का मतलब है, जो बहुत ही उत्तम है, जिसने अपनी बुद्धि को अच्छे से विकसित किया है, ज्ञान अर्जित किया है।

अंधविश्वास का मतलब है मूढ़-विश्वास, अंत को देखने वाले का मतलब है जिन्होंने मूढ़ विश्वासों का अंत देखने वाले।

निर्वाण तत्त्व विज्ञान को जानने वाला वह है जो मोक्ष की महानता को समझ चुका है।

भवबंधन का मतलब है परिवार के बंधनों से, सदा मुक्त हुए का मतलब है बाहर निकलने वाले।

तृष्णा रहित का मतलब है, जिसको इच्छायें नहीं होती।

जिनके पास ये सभी गुण होते हैं, वे ही मानवों में महान और उन्हीं को उत्तम पुरुष कहते हैं।

- ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघवराव

Rs.70/-